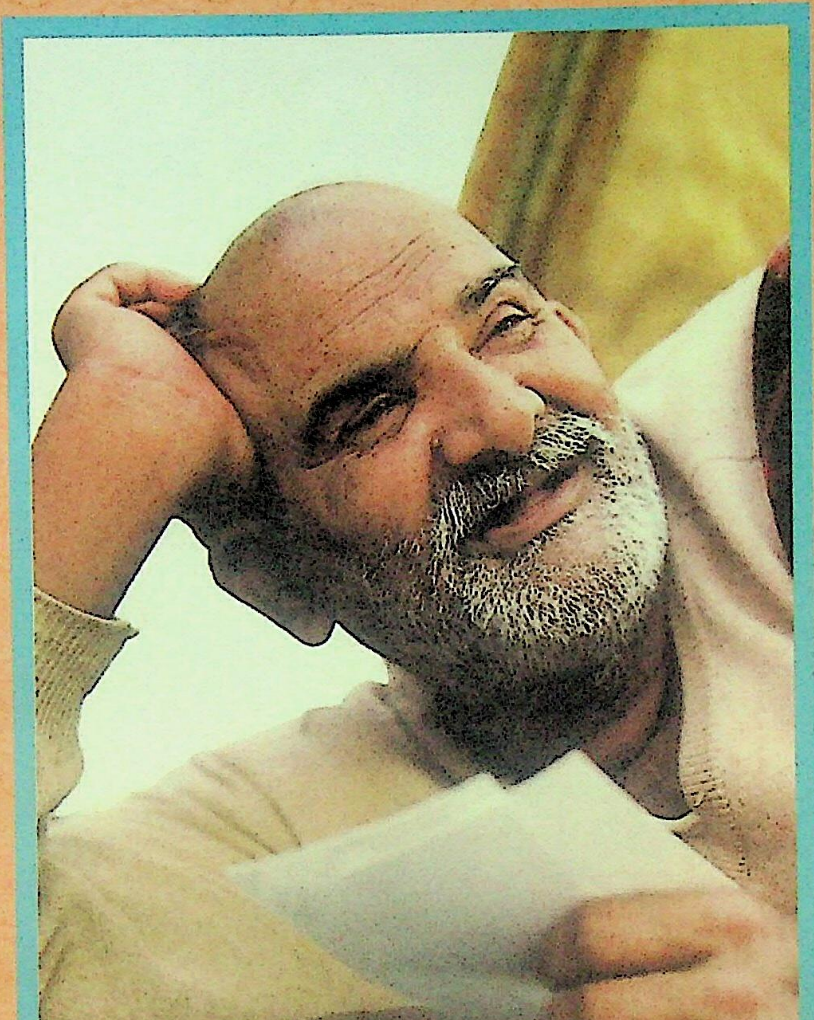


नीब करौरी के बाबा

बदरीनाथ कपूर • परीक्षित कुमार चोपड़ा

(बीसवीं शती के सिद्ध महापुरुष)

नीब करौरी के बाबा

बदरीनाथ कपूर
परीक्षित कुमार चोपड़ा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

NĪBA KARAURĪ KE BĀBĀ

[Spiritual Biography & Reminiscences]

by

Badarinath Kapoor

&

Parikshit Kumar Chopra

ISBN : 978-93-5146-171-5

चतुर्थ संस्करण : 2017 ई०

मूल्य : तीस रुपये (Rs. 30.00)

Publisher

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Post Box No. 1149,

Vishalakshi Building (Basement), Chowk,

Varanasi - 221001 [U.P. INDIA]

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

पोस्ट बॉक्स नं० 1149,

विशालाक्षी भवन (भूगर्भ तल), चौक,

वाराणसी–221 001 [उत्तर प्रदेश, भारत]

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvpbooks@gmail.com • sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

मुद्रक

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

चौक, वाराणसी–221 001

दो शब्द

घोर कलियुग की इस बीसवीं शताब्दी में भी भारतभूमि पर अनेक ऐसे सन्त-महात्माओं ने जन्म लिया जिनका मूल उद्देश्य सम्भवतः मानव-समाज का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उपकार करना ही था। ऐसे सन्त-महात्माओं को इसीलिए अवतारी पुरुष कह सकते हैं क्योंकि इन्होंने भगवान् राम और कृष्ण की ही तरह पृथ्वी का भार हल्का किया और अपने भक्तों का असीम उपकार किया।

वैसे तो बाबा का विराट् स्वरूप है, इनके लीला-कौतुक भी अगणित हैं, इन पर साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तो भी हमें बाबा की जिस छवि के दर्शन हुए तथा इसके फलस्वरूप जो सुख प्राप्त हुआ उसका कुछ अंश ही सही, अपने पाठकों तक पहुँचाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं।

सिद्धि माँ की असीम कृपा की अनुभूति हम इस क्षण प्रत्यक्ष रूप से कर रहे हैं। उन्हीं के आशीर्वाद से यह प्रयास सम्भव हुआ है।

हम उन महानुभावों के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं जिनके संस्मरणों का उल्लेख हमने इस पुस्तिका में किया है।

बदरीनाथ कपूर
परीक्षित कुमार चोपड़ा

अनुक्रम

हमारे महाराज नीब करौरी के बाबा

वे मानव भी थे, देवता भी और ईश्वर भी। उन्होंने इस धरती पर विचरण किया इसलिए वे मानव थे। वे करुणा, दया तथा परोपकार की मूर्ति थे इसलिए देवता थे। वे अन्तर्यामी और सर्वव्यापी थे इसलिए ईश्वर थे। सामान्यजन उन्हें हनुमानजी का अवतार समझते थे। कुछ भक्तों ने महाराजजी में हनुमानजी के दर्शन तो किए ही थे, कुछ ने उनके मुखारविन्द से भी कुछ अद्‌भुत बातें सुनी थीं। रामायण लेकर बैठे हुए एक भक्त ने जिज्ञासा की कि महाराजजी, कौन-सा प्रकरण सुनाऊँ तो महाराजजी ने उत्तर दिया, "वह प्रसंग सुनाओ जब मैं विभीषण से बातें कर रहा था।" सच तो यह है कि उनका अपना कोई रूप नहीं था। वे किसी प्रकार की पूजा या कर्मकाण्ड नहीं करते थे। वे किसी परम्परावादी प्रथा का भी पालन नहीं करते थे। परन्तु उनकी उपस्थिति ही अत्यन्त प्रेरणादायक तथा उद्‌बोधक होती थी।

उनका विशाल और ज्योतिर्मय स्वरूप था। उन्नत ललाट था। बड़ी-बड़ी आँखें थी। नुकीली लम्बोतरी नासिका थी। ऊँचे खड़े कन्धे थे। चौड़ा वक्षस्थल था, लम्बी बाँहें थीं। धोती ही उनका वस्त्र था। ऊपर से कम्बल लपेटे रहते थे। बातें करते-करते वे खो जाते थे। सम्भव है कि किसी भक्त ने उन्हें याद किया हो और महाराजजी कहीं उसी के पास न पहुँच गए हों।

महाराजजी का जन्म आगरा जिले के अकबरपुर गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हुआ था। घर का नाम लक्ष्मीनारायण शर्मा था। ग्यारह वर्ष की छोटी-सी अवस्था में वे घर से निकल पड़े, साधु-वेश धारण कर लिया और अपनी साधना में जुट गए। कुछ भक्तों का कहना है कि बाबा अनेक वर्षों तक गुजरात में रहे और वहीं बाबनियाँ नामक ग्राम के निकट राम तालाब के भीतर निवास तथा साधना करते रहे। फिर कब उन्होंने उस स्थान को छोड़ा और कब फर्रुखाबाद जिले के नीब करौरी गाँव में आकर रहने लगे, इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है।

यहीं महाराजजी गाँव के बाहरी हिस्से में एक खेत में गुफा बनाकर रहते थे। यहाँ कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्हें सामान्य भाषा में चमत्कार कहा जा सकता है। परन्तु जितने भी चमत्कार उनके नाम से जुड़े हैं, उन सबके पीछे औरों के

हित की भावना ही प्रमुख रही। वे सन्त थे और महान् सन्तों की तरह उनका उद्देश्य था मानव जाति का उपकार करना।

उनकी गुफा से कुछ दूरी पर एक कुआँ था। एक दिन एक स्त्री वहाँ पानी भरने के लिए आई। वह पानी भर चुकी तो उसे देखकर महाराजजी की हँसी छूट गई। महाराजजी की हँसी अकारण थी और उसका विषय एक स्त्री था, इसलिए उपस्थित लोगों को वह हँसी कुछ नागवार-सी लगी। उस स्त्री के पानी लेकर चले जाने के बाद एक भक्त ने साहस कर पूछ ही लिया कि महाराजजी, आप उस स्त्री पर हँसे क्यों थे? तो उन्होंने बतलाया कि वह स्त्री थोड़ी देर में पानी लेकर अपने घर पहुँचेगी और फिर उसका पति पानी पीने के लिए जैसे ही आगे बढ़ेगा, उसे साँप काट लेगा। कुछ क्षण बाद महाराजजी ने यह भी कहा कि यदि तुम लोगों में से कोई जाकर उसे पानी पीने से रोक दे तो उसकी जान बच जाएगी। फिर कुछ लोग वहाँ से दौड़ पड़े और उसके घर जा पहुँचे। वे जैसे ही पहुँचे, उसका पति घड़े की तरफ पानी लेने बढ़ रहा था। उसे वहीं ठहरने के लिए कहा गया। तब उन लोगों ने वहाँ देखा कि घड़े के नीचे एक बहुत बड़ा काला नाग बैठा हुआ है।

नीब करौरी बाबा की एक और घटना इस प्रकार है। एक दिन महाराजजी अपनी कुटिया से स्टेशन की ओर गए। स्टेशन वहाँ से लगभग छह-सात मील दूर था। गाड़ी आई और उसके प्रथम श्रेणी के डिब्बे में जा बैठे। गाड़ी चल पड़ी। थोड़ी ही देर बाद उस डिब्बे में टिकट चेकर आ पहुँचा। बिना टिकट प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे महाराजजी को देखकर वह कुपित हो उठा। उसने जंजीर खींची और गाड़ी रुक गई। जबरदस्ती उसने महाराजजी को गाड़ी से उतार दिया। लाइन के पास ही एक पेड़ था। महाराजजी उस पेड़ के नीचे जा बैठे। संयोग से यह स्थान नीब करौरी गाँव के पास ही था।

फिर गार्ड ने सीटी बजाई और झण्डी भी दिखाई। इंजन ने भी सीटी लगाई परन्तु गाड़ी आगे न बढ़ सकी। गाड़ी को चलाने का हर सम्भव प्रयास ड्राइवर ने किया परन्तु उसे इस कार्य में कुछ भी सफलता न मिली। फिर गाड़ी को खींचने के लिए दूसरा इंजन बुलाया गया परन्तु गाड़ी फिर भी न चल पाई। एक स्थानीय मजिस्ट्रेट भी उस गाड़ी पर सवार थे जो अंग्रेज थे। उन्होंने गार्ड और इंजन-चालक से कहा कि आप महाराजजी से प्रार्थना करें और उन्हें फिर से गाड़ी में बैठने के लिए कहें। पहले तो उन्हें यह प्रस्ताव अच्छा नहीं लगा परन्तु जब बार-बार प्रयास करने पर भी गाड़ी न चली तो उन्हें महाराजजी से प्रार्थना करनी ही पड़ी। अनेक यात्री तथा रेलवे अधिकारी फल और मिठाई हाथ में लिए उनकी सेवा में उपस्थित हुए और उनसे प्रार्थना की कि आप गाड़ी पर फिर से सवार हो

जाएँ। महाराजजी ने उनकी बात तो मान ली परन्तु साथ ही दो शर्तें भी रखीं। पहली यह कि रेलवे अधिकारी नीब करौरी में रेलवे स्टेशन के निर्माण का वचन दें। इससे पहले उस गाँव के लोगों को कई मील पैदल चलकर पास के स्टेशन पर जाना पड़ता था। दूसरी शर्त यह थी कि रेलवे के अधिकारी साधु-सन्तों के प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करने का वचन दें। उन रेलवे अधिकारियों ने एक तरह से उनकी बातें मान लीं और कहा कि इस सम्बन्ध में वे अपने अधिकारों का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे और बड़े अधिकारियों को इसके लिए राजी करेंगे। महाराजजी फिर गाड़ी में बैठ गए। लोगों ने उनसे कहा, ''महाराजजी, गाड़ी चलाइये।'' इस पर वे बहुत क्रुद्ध हुए और कहने लगे, ''मेरे पास क्या है जो मैं गाड़ी चलाऊँ।'' फिर इंजन-ड्राइवर ने गाड़ी चलाई। अभी गाड़ी कुछ कदम आगे बढ़ी ही थी कि ड्राइवर ने फिर गाड़ी रोक दी और कहने लगा कि जब तक महाराजजी मुझे आदेश नहीं देंगे तब तक मैं गाड़ी आगे नहीं ले जाऊँगा। महाराजजी ने कहा, ''चलो ले चलो'' और फिर वह गाड़ी को आगे ले चला।

बाद में महाराजजी ने कहा था कि अधिकारियों ने अपने वचन का पालन किया और नीब करौरी स्टेशन जल्दी ही बनवा दिया तथा साधु-सन्तों के प्रति भी रेलवे अधिकारी अधिक उदारतापूर्ण नीति बरतने लगे। कहते हैं कि तभी रेल विभाग ने व्यवस्था दी कि साधु-सन्तों से टिकट नहीं पूछा जाएगा और यह व्यवस्था निरन्तर पिछले पचास से अधिक वर्षों से चली आ रही है। महाराजजी लगभग अठारह वर्षों तक नीब करौरी गाँव में रहे। प्रति वर्ष वहाँ भण्डारे का आयोजन करते रहे जिसमें गाँव वालों का पूर्ण सहयोग रहता था।

फिर महाराजजी फतेहगढ़ में गंगा-तट पर कुछ समय तक वास करने के उपरान्त बराबर भ्रमण करते रहे। सम्भवत: 1940 के आस-पास वे नैनीताल में आए और यहीं उनके मन में हनुमानजी का मन्दिर बनवाने की इच्छा उत्पन्न हुई। अब तक उनके भक्तों की संख्या में काफी वृद्धि हो चुकी थी। इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, बरेली, हलद्वानी, फतेहगढ़, नैनीताल आदि में रहने वाले भक्त महाराज की इच्छा की पूर्ति में जुट गए। पहले हनुमानगढ़ी में हनुमानजी का मन्दिर बना। फिर उसके बाद भूमियाधार, कैंची काकड़ीं घाट आदि आस-पास के क्षेत्रों में भी कई हनुमान मन्दिर बने। कानपुर, शिमला, दिल्ली, वृन्दावन, लखनऊ आदि में भी उन्होंने हनुमान मन्दिर बनवाए। मन्दिर बनवाने में महाराजजी का उद्देश्य यही था कि लोगों में भक्तिभाव हो तथा लोग नाम-स्मरण की ओर उन्मुख हों।

महाराजजी सच्चे सन्त थे। कभी लम्बे भाषण या व्याख्यान नहीं दिये और न कभी धर्मग्रन्थों से हवाले ही दिये। उन्होंने सदा स्थितियों को ही उपदेश का आधार बनाया। हर बात थोड़े ही शब्दों में या संकेत से समझा देते थे। उनका उद्देश्य भक्तों की प्रवृत्ति बदलना था, उन्हें ईश्वरोन्मुख करना तथा परोपकारी बनाना था। वे कहते थे—

''यह सारी सृष्टि ईश्वर की ही सृष्टि है। सबकी सेवा करो, भले ही वह चोर या ठग ही क्यों न हो। अगर वह तुम्हारे पास भूखा आता है तो उसे भोजन दो। हर व्यक्ति भोजन प्राप्त करने का अधिकारी है।''

जब उनसे पूछा जाता था कि महाराजजी, कौन सी साधना की जाए तो उनका उत्तर होता था—

''मानव मात्र की सेवा करने से ही तुम्हें मुक्ति मिल सकती है। तुम्हें न ध्यान करने की आवश्यकता है और न पूजा करने की। सभी जीवों की सेवा करो।''

एक बार किसी भक्त ने पूछा कि महाराजजी, भगवान् को कैसे जाना जाए? उन्होंने उत्तर दिया था, ''गरीबों की सेवा करो।'' और जब उनसे यह पूछा गया कि गरीब कौन है तो उत्तर दिया, ''प्रभु ईसा के सामने सभी गरीब हैं।''

कई भक्तों को शराब पीने, सिगरेट पीने, मांस खाने आदि की आदत होती थी। महाराजजी ने उन्हें कभी मना नहीं किया। वे कहते थे, ''ये उनकी आदत है। उन्हें इससे आनन्द मिलता है। मैं क्यों रोकूँ?''

लोग जैसा करना चाहते थे, महाराजजी उन्हें वैसा करने देते थे। वे कभी किसी से यह नहीं कहते थे कि तुम सिगरेट मत पियो या शराब मत पियो। वे इस सम्बन्ध में कभी कुछ कहते ही नहीं थे। परन्तु हाँ, वे ऐसी स्थितियाँ अवश्य उत्पन्न कर देते थे कि भक्त की बुरी लत आप-से-आप छूट जाए।

एक मदिरासेवी भक्त के सम्बन्ध में महाराजजी ने टिप्पणी की थी, ''यदि उसके सब मित्र पीते हैं तो ठीक है।''

जब कभी कोई भक्त पूछ बैठता था कि ''कामनाओं से मुक्ति कब होगी?'' तो महाराजजी कहते थे कि ''जब समय सही होगा।''

यह सत्य है कि अधिकतर भक्त महाराजजी के पास अनेक प्रकार की समस्याएँ लेकर पहुँचते थे। ऐसा देखने में आता था कि इस तरह के आकांक्षी लोग उनके पास जब कुछ क्षण बैठ लेते थे तब उनकी सभी समस्याएँ आप-से आप हल हो जाती थीं। उनके सत्संग का अमृत एक बार चख लेने पर उसे चखने की पुनः-पुनः इच्छा उत्पन्न होती थी।

वे सर्व-समर्थ थे। हर एक के हृदय में बैठकर उसकी मंशा जान लेते थे और उसे पूरी भी कर दिया करते थे। पानी को दूध या पेट्रोल में बदल देते थे। स्थितियों या उनके परिणामों को क्षण भर में बदल देते थे। परन्तु महाराजजी यह भी कहते थे, ''ईश्वर ही सब कुछ करता है, मैं कुछ नहीं कर सकता।''

महाराजजी के सम्बन्ध में एक बात ध्यान रखने की यह है कि वे सदा आडम्बरप्रिय लोगों से दूर ही रहते थे, उनसे मिलते नहीं थे या उनसे किनारा कर जाते थे। भीड़-भाड़ तथा समारोहों से भी दूर ही रहा करते थे। सच्चे सन्तों की तरह आत्म-प्रचार से भी कोसों दूर ही रहा करते थे।

अमृत-वचन

गुरु को अपने शिष्य की हर बात की जानकारी होनी चाहिए।

□□□

गुरु कभी अपने भक्त को त्यागता नहीं।

□□□

गुरु अविनाशी, अमर तथा मृत्यु और जरा से परे होता है।

□□□

यदि लगन अच्छी गहरी हो तो गुरु स्वयं खिंचा चला आता है।

□□□

गुरु का शरीर से मिलन आवश्यक नहीं, गुरु बाहरी वस्तु नहीं।

□□□

गुरु चाहे जैसा हो—वह पागल भी हो सकता है या साधारण व्यक्ति भी। यदि आपने उसे गुरु मान लिया है तो वह अधिपतियों का भी अधिपति है।

□□□

मैं हर एक का गुरु हूँ।

□□□

कपड़े को रँगना आसान है परन्तु अपने दिल को रँगना बहुत मुश्किल है।

□□□

महाराजजी, भगवान् को कैसे जाना जाए?

—लोगों की सेवा करो।

□□□

महाराजजी, मुझे आत्मबोध कैसे हो?

—लोगों को खिलाओ।

□□□

महाराजजी, कुण्डलिनी को कैसे जागृत किया जाए?

—लोगों की सेवा भी करो और उन्हें खिलाओ भी।

□□□

भक्त ने फिर पूछा.........''गरीब कौन है?'' महाराजजी ने उत्तर दिया.........''प्रभु के सामने सभी गरीब हैं।'' एक बार महाराजजी ने कहा था, ''प्रत्येक मस्तिष्क की कुंजी मेरे हाथ में है। मैं उसे किसी भी दिशा में घुमा सकता हूँ।''

□□□

महाराजजी ने कहा था : ''वह हमारे जीवन में इतना घुला-मिला अंश है कि जब वह हमारे पास भी होता है तब भी हमें उसकी सामर्थ्य की अनुभूति नहीं हो पाती। वह अपनी महत्ता तथा श्रेष्ठता को छिपाए रहता है। हम लोग ऐसे किस्सों को सँजोते नहीं कदाचित् हम समझते हैं कि वह ऐसे सदा हमारे साथ रहेगा।''

□□□

चमत्कारी बाबाओं के सम्बन्ध में महाराजजी कहते थे : ''यह क्या है? यह सब पाखण्ड है''। वह (ईश्वर) चमत्कार कर सकता है। सबसे बड़ा चमत्कार तो यह है कि वह व्यक्ति का हृदय और मन अपनी ओर मोड़ लेता है। मेरा हृदय और मन अपनी ओर मोड़ने वाला भी वही है। महाराजजी ने एक बार कहा था : ''यदि आपमें पर्याप्त विश्वास है तो आप अपनी धन-सम्पत्ति का त्याग कर सकते हैं।''

□□□

एक व्यक्ति ने महाराजजी से पूछा कि मैं कैसे साधना करूँ? महाराजजी ने उससे कहा : ''इसके सम्बन्ध में सिर खपाने की आवश्यकता नहीं, बस हनुमानजी की तरह राम-राम बार-बार जपा करो।''

□□□

जैसी सेवा हनुमानजी ने की, वैसी सेवा तुम भी करो। मैं संसार का पालक हूँ। पूरा संसार मेरे लिए बालकवत् है।

□□□

शरीर छोड़ने के चार दिनों पहले महाराजजी ने कहा : ''माँ, मैं क्या करूँ। किसी में ऐसी दृष्टि नहीं जो मेरा अनुसरण करे। न कोई मुझे जानने वाला है और न ही कोई समझने वाला। मैं करूँ भी तो क्या?''

□□□

महाराजजी ने कहा था : ''महान् साधुओं का मानव-शरीर नहीं होता। वे सर्वव्यापक होते हैं। यदि कोई साधु अपना रूप परिवर्तित करता है तो आवश्यक नहीं कि वह मनुष्य का ही रूप धारण करे। आत्मा सूक्ष्म रूप है और मानव-शरीर स्थूल तथा विशाल रूप।''

□□□

हर एक में ईश्वर को देखो। वैयक्तिक मतभेदों तथा कर्मों के आधार पर शिक्षा देना धोखा है।

❑❑❑

"सन्त पक्षियों की तरह संग्रह नही ंकरते। उनके पास जो होता है वे दे देते हैं।"

❑❑❑

यदि आप ईश्वर को देखना चाहते हों तो अपनी इच्छाओं को नष्ट कर दें। इच्छाएँ मन में होती हैं। जब आपके मन में कोई इच्छा पैदा हो तो उसके लिए सचेष्ट मत हों फिर वह अपने आप नष्ट हो जाएगी। यदि आप चाय का एक प्याला पीना चाहते हैं तो मत पीजिए। चाय पीने की इच्छा आप से आप मर जाएगी।

❑❑❑

आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए जिन चीजों की आवश्यकता पड़ेगी, ईश्वर आपको देगा। किन्तु आप किसी चीज को पकड़कर मत बैठें।

❑❑❑

गरीब से प्यार करो। उसकी सेवा करो। गरीब को हर चीज दो। अपने कपड़े भी दे दो। अपना सब-कुछ दे दो। येशु ने अपना सब-कुछ दे दिया था। यहाँ तक कि अपना शरीर भी दे दिया था।

❑❑❑

मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं केवल दूसरों की सेवा करने के लिए जीवित हूँ।

❑❑❑

कच्ची मिट्टी का पात्र टूट जाने पर उसकी मिट्टी का दुबारा उपयोग हो सकता है परन्तु पक्की मिट्टी के बर्तन टूट जाने पर उसे फेंकना भी पड़ता है।

❑❑❑

कामुकता, लोभ, क्रोध तथा आसक्ति नरक के ही द्वार हैं।

❑❑❑

यदि तुम किसी चीज को खाली नहीं करोगे तो उसे भरोगे कैसे ?

❑❑❑

''विवाह वस्तुतः गहरी आसक्ति है। यदि आप विवाहित हैं तो ईश्वर से जुड़ने के लिए गहरी भक्ति तथा गहरे अनुशासन की आवश्यकता होगी।''

□□□

''मैं यहाँ भी हूँ और अमेरिका में भी हूँ। मुझे जहाँ कोई याद करता है वहीं मैं जाता हूँ।''

□□□

एक बार कैंची आश्रम में विचार-विमर्श के बीच महाराजजी ने कहा था : ''आप लोग समझते हैं कि मैं सम्पत्ति इकट्ठी कर रहा हूँ और जमींदार बनना चाहता हूँ। मुझे किसी भी वस्तु से जरा भी आसक्ति नहीं है। मैं वैसे ही सब-कुछ छोड़ दूँगा जैसे मैंने लंका छोड़ी थी।'' पाठकों को स्मरण होगा कि हनुमानजी ने लंका जला दी थी।

□□□

एक बार बिगड़े बच्चों की तरह महाराजजी ने कहा : ''ओ माँ, मुझे भजन सुनाओ।'' फिर वे भजन स्वयं ही गाने लगे, जिसका आशय था कि बिना भजन के आदमी ठीक वैसा ही होता है जैसे बिना पानी का कुँआ, बिना दूध की गाय या बिना दीप का मन्दिर।

□□□

महाराजजी ने एक बार एक भक्त से कहा था : ''जैसे तुम पानी को फ़िल्टर करते हो वैसे ही तुम्हें गुरुओं की भी कुछ जानकारी होनी चाहिए।''

□□□

''जगह-जगह ईश्वर को खोजते फिरने से कहीं अच्छा है हर एक में ईश्वर को देखना।''

□□□

दाँत में पीड़ा होने पर आप चाहें जो भी उपचार करें, आपका ध्यान सदा दाँत पर ही टिका रहेगा।

□□□

मैं संसार में रहता तो हूँ परन्तु उससे मेरा लगाव नहीं। मैं बाजार में से गुजर तो रहा हूँ परन्तु खरीददार नहीं हूँ।

□□□

यदि आप में किसी चीज के प्रति आसक्ति नहीं तो आप सादा जीवन सादे वातावरण में बिताना पसन्द करेंगे।

□□□

मन्दिर पत्थरों के ढेर ही तो हैं। एक आसक्ति उनसे जोड़े रखती है।

□□□

आत्मबोध के मार्ग में आसक्ति सबसे बड़ा रोड़ा है।

□□□

यह सारा संसार ही आसक्तिमय है। और आप इसलिए चिन्तित हैं कि स्वयं आसक्त हैं।

□□□

संसार का बदलते रहने का स्वभाव ही है। कलियुग (काला युग) को यदि ऐसा रूप ही धारण करना है तो करने दो। यदि आप स्वामी नहीं तो किसी तरह आप उसे रोक भी नहीं सकते। फिर चीं-चपड़ करने की क्या जरूरत है।

□□□

यदि मरने के समय आपका ध्यान आम पर है तो आप कीड़े के रूप में जन्म लेंगे। यदि एक साँस की आकांक्षा भी आपमें रह गई तो आपको पुनः जन्म लेना पड़ेगा।

□□□

सन्त के नेत्र सदा परमात्मा पर केन्द्रित रहते हैं। जिस क्षण भी वह उन्हें अपना मान लेता है सन्तपन समाप्त हो जाता है।

□□□

मैं सब कुछ जानता हूँ। मैं क्यों जानूँ?

□□□

कर्म ही ईश्वर है, कर्म ही पूजा है।

□□□

जो ईश्वर का काम करता है उसका काम ईश्वर करता है।

□□□

निर्धन की सेवा करो और ईश्वर को याद रखो। तुम येशु से मिलकर एकाकार हो जाओगे।

□□□

अपने मस्तिष्क को सदा कार्य में लगाए रखना चाहिए।

❑❑❑

हृदय कभी बूढ़ा नहीं होता।

❑❑❑

यदि किसी माता का पल्लू, सिर पर न होता तो महाराजजी कहते : ''माँ, यह ढंग नहीं है।'' और वह माँ सिर पर पल्लू ले लेती।

❑❑❑

माता का स्थान ठीक ईश्वर के बाद होता है, और उसने इस रूप का निर्माण इसलिए किया है कि अपने को इसके द्वारा अभिव्यक्त कर सके। ईश्वर और माता ही सभी अपराधों को क्षमा करते हैं।

❑❑❑

बालिकाओं के विद्यालय के निर्माण के प्रसंग में महाराजजी ने कहा था : ''बालिकाओं को शिक्षित करो और वे समाज को शिक्षित करेंगी।''

❑❑❑

सैकड़ों योगियों से ऊँचा पद सती स्त्री का होता है। स्त्रियाँ ईश्वर को प्यार अधिक सहज भाव से करती हैं।

❑❑❑

स्त्री को अपने पति की सेवा के द्वारा ईश्वर की सेवा करनी चाहिए। स्त्री यदि अपने पति के प्रति निष्ठावान है तो वह योगियों से ऊँची है।

❑❑❑

ईश्वर के इस परिवार में सभी स्त्रियाँ माताएँ तथा बहनें हैं और सभी पुरुष पिता तथा भाई।

❑❑❑

सम्पूर्ण संसार तुम्हारा घर है और समस्त लोग तुम्हारा परिवार है।

❑❑❑

सभी स्त्रियों को मातृवत् देखो और उनकी माता की तरह सेवा करो। जब तुम सारे संसार को अपनी माँ की तरह देखने लगोगे, तुम्हारा अहं हवा हो जाएगा।

❑❑❑

ब्रह्मचारी बनना आवश्यक है। एक स्त्री के साथ रहनेवाला भी ब्रह्मचारी होता है। स्त्री आपको एक क्षण में ईश्वर के पास ले जा सकती है।

❑❑❑

स्त्री सर्प है, उसे छूना भी नहीं चाहिए।

□□□

कामिनी और कंचन ईश्वर के मार्ग के रोड़े हैं।

□□□

यौन ऊर्जा में ईश्वर को रचने की शक्ति है। यदि आप अपनी यौन ऊर्जा बढ़ा लें तो आपमें ब्रह्म को अनुभूत तथा प्राप्त करने की शक्ति विकसित हो जाएगी।

□□□

येशु और हनुमान ने सभी स्त्रियों का मातृत्व देखा था। आपको ईश्वर को प्राप्त करने के लिए माता को जानना होगा।

□□□

मन्दिर में जूते उतार कर जाना चाहिए जिससे उस स्थान की हलचलें पैरों के रास्ते आपमें प्रवेश कर सकें।

□□□

महाराजजी ने एक बार माताओं से कहा था कि जिन कम्पनों (क्रियाओं) के साथ भोजन बनाया जाता है वह निश्चय ही आपकी मन:स्थिति से प्रभावित होता है। यदि अपने भोजन को आप प्रसाद बना दें तो उससे आप पवित्र होंगे। कोई पुरुष कितना ही पवित्र क्यों न हो, यदि वह सही मन:स्थिति के बिना बना हुआ भोजन प्राप्त करता है तो वह भोजन उसके मन में विक्षोभ उत्पन्न करेगा। शुद्ध भोजन का सेवन कर योगी भी महान् बन जाता है।

□□□

भक्तों ने कई बार देखा है कि माताएँ अपने हाथ से महाराजजी को भोजन करा रही हैं। ऐसे ही एक अवसर पर महाराजजी ने कहा था : ''मैं पुरुषों को खिलाता हूँ परन्तु स्त्रियों को मुझे खिलाना चाहिए, क्योंकि सभी स्त्रियाँ मेरी माताएँ हैं।''

□□□

मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, मुझे राम ही दिखाई पड़ते हैं, इसीलिए मैं हर एक वस्तु का सम्मान करता हूँ।

□□□

मैं कुछ नहीं करता, ईश्वर ही सब कुछ करता है।

□□□

मुझमें कोई सिद्धि नहीं। मैं तो कुछ भी नहीं जानता।

❑❑❑

सन्त कभी धन ग्रहण नहीं करता।

❑❑❑

धन चिन्ताओं का सर्जक है।

❑❑❑

धन त्याग दो तो सारा धन तुम्हारा है।

❑❑❑

धन से लगाव ईश्वर के प्रति विश्वास के अभाव का सूचक है।

❑❑❑

धन मार्ग का रोड़ा है। ईश्वर से मिलने के लिए धन की आवश्यकता नहीं।

❑❑❑

धन समस्या नहीं। समस्या तो उसका सही उपयोग न करने से उत्पन्न होती है। यदि धन का समझदारी भरा उपयोग हो तो लाखो-करोड़ों रुपए सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

❑❑❑

कुण्डलिनी को जाग्रत् करने के लिए ध्यान रखो। ईश्वर का चिन्तन करने से वह अपने आप जाग्रत् हो जाती है।

❑❑❑

ईश्वर को देखने के लिए विशेष नेत्रों की आवश्यकता होती है, अन्यथा उस आघात को सहन नहीं किया जा सकता।

❑❑❑

एक व्यक्ति आश्रम में दिन-रात इतना कठोर परिश्रम करता था कि उसे महाराजजी के दर्शन तक नहीं होते थे। परन्तु एक दिन ऐसा हुआ कि शाम के समय सभी भक्त जा चुके थे और महाराजजी अकेले तख्त पर बैठे हुए थे। वह महाराजजी के पास जाकर बैठ गया। महाराजजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस आदमी ने कभी शक्ल तक नहीं दिखाई। फिर उन्होंने उससे पूछा : "तुम्हें क्या चाहिए?"

उस आदमी के मुँह से एक ही शब्द निकला—आत्मज्ञान।

महाराजजी ने उत्तर दिया : "सभी की सेवा करना ही आत्मज्ञान है।"

□□□

एक व्यक्ति स्नान के लिए गंगाजी की ओर जा रहा था कि रास्ते में महाराजजी के दर्शन हुए। महाराजजी ने यह कहते हुए उसे वापस लौटा दिया : ''लोगों की सेवा करना गंगा-स्नान से कहीं उत्तम है।''

□□□

दो वृद्ध मेले में जा रहे थे। मेले के समय गंगा का स्नान पुण्य का कार्य समझा जाता है। महाराजजी ने टिप्पणी की : ''नहीं, स्नान यहीं कर लो। गंगा हर जगह है।''

□□□

एक बार महाराजजी प्रोफेसर मुकर्जी (इलाहाबाद यूनिवर्सिटी) के यहाँ ठहरे हुए थे। वे कुछ अस्वस्थ थे इसलिए उन्होंने कमरे के बाहर ताला लगवा दिया था। बाद में वे शहर की ओर दौड़ते हुए गली में दिखाई पड़े। जब उनसे पूछा गया कि बन्द दरवाजे से आप कैसे निकले तो उन्होंने कहा : ''बन्दर ने मच्छर-सा लघु रूप धारण कर लिया और खिड़की से उड़ गया।''

□□□

—महाराजजी, आप सब कुछ कर सकते हैं। आप हनुमान हैं।

—मैं हनुमान नहीं हूँ, मैं कुछ भी नहीं कर सकता...... ।

□□□

मैं सबकुछ हूँ और मैं किसी के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।

□□□

महाराजजी ने एक प्रसिद्ध पण्डित को कैंची आश्रम में श्रीमद्भागवत का पाठ करने के लिए बुलाया। ये महाशय बड़ी भारी सभाओं तथा शिक्षित श्रोताओं में बोलने के अभ्यस्त थे। उन्होंने इस सम्बन्ध में महाराजजी से कहा कि व्यक्ति बहुत कम हैं और अधिकतर गँवार हैं। महाराजजी ने कुछ झिड़की के-से स्वर में कहा : ''चिन्ता मत करो, हनुमानजी सुन रहे हैं।''

●

संस्मरण

डॉ० रिचर्ड अल्पर्ट अमेरिका से 1967 में पहली बार भारत आए थे। रिचर्ड को उनके मित्र कार से कैंची आश्रम ले गए। कार आश्रम के पास आकर रुकी। रिचर्ड के मित्र कार से बाहर निकले। तब तक आस-पास खड़े अनेक लोगों ने कार को घेर लिया। रिचर्ड के मित्र ने उन लोगों से पूछा : ''गुरुजी कहाँ हैं ?'' भीड़ में से किसी ने इशारा किया कि उस सामने वाली पहाड़ी पर। रिचर्ड का वह साथी पहाड़ी की तरफ दौड़ चला। भीड़ भी उसके साथ हो ली। रिचर्ड कार में अकेले पड़ गए। अपनी इस उपेक्षा से वे कुछ घबराए भी। फिर भी कार से बाहर निकले और नंगे पैर उबड़-खाबड़ रास्ते पर गिरते-पड़ते उस पहाड़ी पर चढ़ने लगे। उनके मन में गुरुजी से मिलने की तनिक भी उत्सुकता नहीं थी। वस्तुतः उन्हें पोंगापंथी साधुओं से सख्त नफरत थी।

पहाड़ी पर चढ़ते समय जब वे एक मोड़ पर पहुँचे तो उन्हें एक सुन्दर घाटी दिखाई पड़ी, जिसमें एक पेड़ के नीचे साठ-सत्तर वर्ष की अवस्था का एक वृद्ध बैठा हुआ था और उसने कम्बल ओढ़ रखा था। यही कैंची आश्रम के बाबा महाराजजी थे। आठ-दस स्थानीय लोग उन्हें घेरे हुए बैठे थे। घाटी की सुन्दरता, उसकी हरियाली तथा पवित्रता ने रिचर्ड का मन अपनी ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया। आकाश में घुमड़ते हुए बादलों ने इस दृश्य को और भी सुहावना बना दिया था।

रिचर्ड का साथी दौड़ा-दौड़ा महाराजजी के समीप गया और उन्हें धरती पर लेटकर दण्ड-प्रणाम करने लगा। वह कुछ बोले जा रहा था और महाराजजी उसकी पीठ और सिर थपथपा रहे थे।

इस दृश्य को देखकर रिचर्ड कुछ और भी विचलित हुए। तब तक रिचर्ड भी वहाँ जा पहुँचे। इनके मन में बाबा के चरण छूने की न इच्छा हुई और न इन्होंने उनके चरण छुए ही। इन्होंने चरण छूना आवश्यक भी नहीं समझा। हाँ, महाराजजी अवश्य इनकी ओर रह-रहकर देख लेते और एक-आध बार उन्होंने इनकी ओर कंखियों से इशारा भी किया। उनके इस प्रकार देखने से रिचर्ड की घबराहट और भी अधिक तीव्र हो गई। फिर महाराजजी रिचर्ड को सम्बोधित कर के कुछ कहने लगे। रिचर्ड की समझ में उनकी हिन्दी न आई। पास खड़े व्यक्ति ने अनुवाद किया और रिचर्ड के मित्र से कहा : ''क्या आपके पास

महाराजजी का चित्र है?'' रिचर्ड के मित्र ने उत्तर दिया : ''हाँ, है।'' फिर कम्बल लपेटे हुए बाबा ने उससे कहा कि वह चित्र इन्हें (डॉ० रिचर्ड की ओर इशारा करके) दे दो।

डॉ० रिचर्ड को इस बात से कुछ प्रसन्नता हुई कि यह व्यक्ति अपना चित्र मुझे दे रहा है, परन्तु फिर भी इनके मन में उनके चरण-स्पर्श करने की इच्छा न हुई।

फिर बाबा ने कहा : ''आप एक बड़ी कार से आए हैं?'' रिचर्ड ने उत्तर दिया : ''हाँ''। कार मँगनी की थी। यद्यपि वे इसे माँगने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि इतना भारी जोखिम क्यों उठाया जाए। इस कारण यह कार भी उनके लिए परेशानी ही थी।

महाराजजी ने फिर रिचर्ड की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा : ''क्या यह कार मुझे दोगे?'' रिचर्ड के मुँह से निकलने को ही था : ''क्या कहा?'' इससे पहले ही बाबा के चरणों में अभी तक लेटे हुए उनके साथी ने कहा : ''यदि आप चाहते हैं तो इसे ले लें। यह आप ही की है।'' इतना सुनते ही रिचर्ड सकपका गए और हिम्मत बटोर कर कहने लगे : ''जरा रुकिए। यह डेविड की कार है। इसे हम कैसे दे सकते हैं?'' यह सुनकर महाराजजी की हँसी निकल गई। सच तो यह है कि रिचर्ड को छोड़कर हर कोई हँस रहा था। महाराजजी ने फिर रिचर्ड से कहा : ''आपने अमेरिका में खूब धन कमाया है?'' रिचर्ड के मस्तिष्क में एक क्षण के लिए प्रोफेसर और तस्कर के रूप में पिछले कुछ वर्षों में अर्जित अपार राशि कौंध-सी गई और उन्होंने गर्व से कहा ''जी हाँ।''

—कितना कमाया?

—पच्चीस हजार डॉलर।

रिचर्ड ने इस राशि को अहंवश कुछ बढ़ा-चढ़ाकर ही बतलाया था। लोगों ने डॉलरों के रुपए बनाकर जब महाराजजी से बताया तब इस ऊँची राशि को सुनकर हर कोई दाँतों तले उँगली दबाने लगा। वैसे रिचर्ड ने डींग हाँकी थी। सच तो यह है कि उन्होंने कभी इतने परिमाण में धन नहीं कमाया था।

सम्भवत: महाराजजी से असलियत छिपी नहीं थी, इसलिए वे कुछ देर तक हँसते ही रहे। उनकी हँसी निकली चली जा रही थी। फिर उन्होंने कहा : ''तुम इन रुपयों से मुझे ऐसी कार ले दोगे?'' रिचर्ड के मन पर उस समय क्या बीता, यह तो वही जाने पर उनके दिल में यह बात जरूर आई कि जो व्यक्ति मेरा नाम तक नहीं जानता वह मुझसे सात हजार डॉलर की कार कैसे माँग रहा है। परन्तु उनके मुँह से निकला ''हो सकता है।'' रिचर्ड को अत्यन्त विचलित देखकर महाराजजी ने अपने भक्तों से कहा : ''इन्हें यहाँ से ले जाएँ और प्रसाद

खिलाएँ।'' फिर डॉ० रिचर्ड और उनके साथी ने दिव्य प्रसाद पाया और कुछ देर के लिए आश्रम में ही विश्राम किया। थोड़ी देर बाद वे दुबारा महाराजजी के पास गए तो उन्होंने इन्हें अपने पास बैठाया। फिर वे बड़े गौर से इनकी ओर देखते रहे और बोले : ''कल रात को तुम आकाश में तारों का आनन्द ले रहे थे?''

—जी।

—तुम अपनी माँ के बारे में भी सोच रहे थे।

—जी।

पिछली रात यहाँ से दो-ढाई सौ किलोमीटर दूर रिचर्ड किसी होटल में ठहरे थे और रात को लघुशंका के लिए बाहर मैदान में गए थे। फिर तारों से जगमगाते आकाश को देखकर वे कुछ समय खुले में ही रहे। प्रकृति से यह मिलन उन्हें बहुत भला लगा। उस समय उन्हें अपनी माता का ध्यान आया। उनकी माता का देहान्त कोई नौ महीने पहले तिल्ली के बढ़ जाने से हुआ था।

महाराजजी ने फिर पूछा : ''गत वर्ष आपकी माता का निधन हो गया था।''

—जी।

—मरने से पहले उनका पेट बहुत अधिक फूल गया था?

—कुछ क्षण रुककर रिचर्ड ने कहा—जी।

फिर बाबा ने आँखें बन्द कर लीं और कमर को पीछे की ओर झुकाते हुए अंग्रेजी में बोले—वे तिल्ली से मर गई थीं।

उस समय रिचर्ड इतना सुनकर चकित हो गए। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि महाराजजी यह सब कैसे जान और देख रहे हैं। लगता नहीं कि इसमें कार्य-कारण का कोई सम्बन्ध हो। उन्हें महाराजजी के मुँह से आप-से-आप सब-कुछ निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था। रिचर्ड का मस्तिष्क चकराने लगा। किस बटन को दबाकर पूरी फिल्म दिखा रहे हैं? मुझे वे लोग यहाँ क्यों लाए। कोई उत्तर उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

वे सोच रहे थे कि यह आखिर हुआ कैसे। जो बातें महाराजजी कह रहे थे वे उसके साथी को भी मालूम नहीं थीं। सब-कुछ वर्णनातीत था। उनका मस्तिष्क चक्कर खा रहा था।

रिचर्ड नशे के आदी भी थे। उन्हें लगा कि यह सब-कुछ नशे के कारण तो नहीं मालूम हो रहा है। उनका मस्तिष्क उस समय कम्प्यूटर की तरह चल रहा था, परन्तु वे किसी नतीजे पर पहुँच नहीं पा रहे थे कि महाराजजी आखिर हजारों किलोमीटर दूर बैठे इन बीती हुई बातों को कैसे बता पा रहे हैं।

फिर रिचर्ड को लगा कि मेरा सिर फटा जा रहा है और छाती में तीव्र वेदना हो रही है। वे एकदम चिल्ला उठे। वे काफी देर तक चिल्लाते रहे। परन्तु उनके इस चिल्लाने से यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था कि उनको प्रसन्नता की अनुभूति हो रही थी या विषाद की।

परन्तु उन्हें ऐसा अवश्य लग रहा था कि मैंने अपना कोई उद्देश्य पूरा कर लिया है और अपनी मंजिल पर पहुँच गया हूँ।

डॉ० रिचर्ड को एल०एस०डी० की गोलियों की भी लत पड़ी हुई थी। एक दिन उनके मन में महाराजजी से इन गोलियों के सम्बन्ध में कुछ विशेष जानकारी प्राप्त करने का विचार भी आया परन्तु वे किसी कारण से महाराजजी से प्रश्न न कर सके। दूसरे दिन जब वे महाराजजी के समक्ष उपस्थित हुए तो महाराजजी ने ही पूछा : ''कुछ पूछना चाहते हो।'' रिचर्ड के मन में उस समय कोई प्रश्न नहीं उठ रहा था इसलिए बिल्कुल मूढ़ों की तरह उन्होंने कहा : ''नहीं महाराजजी, मेरे मन में कोई प्रश्न नहीं है।'' यह उत्तर महाराजजी को कुछ अस्वाभाविक-सा लगा और उन्होंने कुछ उखड़े हुए स्वर में कहा : ''वह दवा कहाँ है?'' रिचर्ड की समझ में कुछ न आया। परन्तु उनके मित्र ने कहा कि एल०एस०डी० की गोलियों के सम्बन्ध में तो महाराजजी नहीं पूछ रहे हैं? महाराजजी ने सिर हिलाया। गोलियों की डिबिया कार में रखी हुई थीं। रिचर्ड उसे लेने के लिए गए। जब डिबिया ले आए तो उन्होंने अपनी हथेली पर उसे उड़ेल लिया। उसमें कई तरह की और भी गोलियाँ थीं। कोई दस्त की तो कोई बुखार की। महाराजजी ने उन सभी गोलियों के बारे में पूछा : ''क्या ये शक्तिवर्धक हैं।'' रिचर्ड की समझ में आया कि महाराजजी शारीरिक बलवर्धन के सम्बन्ध में पूछ रहे हैं, इसलिए उन्होंने उत्तर दिया—नहीं। परन्तु बाद में उनकी समझ में आया कि महाराजजी यह पूछ रहे थे कि क्या ये समाधि की सिद्धि में सहायक होती हैं। खैर!

महाराजजी ने हथेली फैला दी। रिचर्ड ने एल०एस०डी० की एक गोली महाराजजी की हथेली पर रख दी। हर गोली में 300 माइक्रोग्राम विशुद्ध एल०एस०डी० था जो एक युवा व्यक्ति के लिए एक बार की पूरी खुराक थी। महाराजजी ने और गोली का संकेत किया। रिचर्ड ने एक गोली और रख दी। उन्होंने फिर संकेत किया और रिचर्ड ने एक और गोली रख दी। 900 माइक्रोग्राम भारी खुराक थी जो किसी नए व्यक्ति के लिए घातक सिद्ध हो सकती थी। सहसा महाराजजी ने तीनों गोलियाँ एक साथ फाँक लीं। रिचर्ड को परेशानी हुई कि न जाने इनका प्रभाव कैसा हो।

रिचर्ड वहाँ एक घण्टे तक बैठे रहे। महाराजजी पर उनकी गोलियों का कुछ भी प्रभाव न दिखाई पड़ा। वे रिचर्ड की ओर देखकर हँसते भर रहे। रिचर्ड जब अमेरिका वापस पहुँचे तो उन्होंने अपने मित्रों से इस अद्भुत घटना का वर्णन किया। किसी को भी विश्वास नहीं हुआ। स्वयं रिचर्ड के मन में भी यह बात आई कि हो न हो महाराजजी ने गोलियाँ खाने का स्वाँग रचा हो और झटके से पीठ के पीछे फेंक दी हों।

तीन वर्षों बाद रिचर्ड जब पुनः भारत आए तो महाराजजी ने उनसे पूछा : "पिछली बार जब तुम यहाँ आए थे तो तुमने मुझे गोलियाँ दी थीं?"

—जी हाँ।

—क्या मैंने खाई थीं?

रिचर्ड के चेहरे पर के भाव डूबने-उतराने लगे। पर उन्होंने कहा : "हाँ, खाई तो थीं।"

—फिर क्या हुआ?

—कुछ नहीं।

—अच्छा, अब जाओ।

महाराजजी ने उस समय रिचर्ड को वहाँ से जाने की आज्ञा दे दी।

दूसरे दिन महाराजजी अपने तख्त पर बैठे हुए थे कि रिचर्ड उनके दर्शनों के लिए आए। महाराजजी ने उनसे कहा :

—वह ओषधि तुम्हारे पास और है?

रिचर्ड की अटैची में कुछ गोलियाँ अवश्य थीं। इसलिए कहा : "हाँ हैं।"

—ले आओ।

रिचर्ड डिबिया ले आए। उसमें 300-300 माइक्रोग्राम की पाँच गोलियाँ थीं। उनमें से एक गोली के दो टुकड़े हो चुके थे। रिचर्ड ने उन सबको अपनी हथेली पर रखा और हथेली को बाबा की तरफ बढ़ाया। महाराजजी ने साबुत चारो गोलियाँ को एक-एक करके उठाया और सामान्य ढंग से मुँह में रखा और उन्हें निगल गए। इस प्रकार रिचर्ड के मन के प्रश्न का उत्तर महाराजजी ने दे दिया।

फिर महाराजजी ने पूछा : "क्या मैं पानी पी सकता हूँ?"

—अवश्य।

—गर्म या ठण्डा।

—चाहे जैसा भी।

महाराजजी ने पानी के लिए आवाज दी और जब पानी लाया गया तो उन्होंने एक गिलास पानी पी लिया। फिर उन्होंने पूछा : "इनका असर कब तक होगा?"

—बीस मिनट से एक घण्टे तक।

तब महाराजजी ने अपने एक सेवक को अपने पास बुलाया। उसने घड़ी लगा रखी थी। महाराजजी ने उसकी कलाई को कसकर थाम लिया और तब उसमें समय देखा।

फिर पूछने लगे : ''क्या यह मेरे सिर पर तो नहीं चढ़ जाएँगीं ?''

—हो सकता है।

सब लोग वहीं बैठे रहे। फिर महाराजजी ने कम्बल से अपना मुँह ढँक लिया। कुछ देर बाद जब उन्होंने मुँह पर से कम्बल हटाया तो उनकी आँखें घूम रही थीं, मुँह खुला था और लगता था कि वे पागल हो गए हैं। रिचर्ड को काटो तो खून नहीं। आखिर यह हो क्या रहा है। उन्हें लगा कि मुझे महाराजजी की शक्ति परखने में भूल हुई है। वे यह भी समझ रहे थे कि महाराजजी का तिस पर वृद्ध शरीर भी है। (यद्यपि उनकी वास्तविक अवस्था से वे परिचित नहीं थे।) उन्हें अपने पर इस बात की बड़ी ग्लानि हो रही थी कि मैंने क्यों 1200 माइक्रोग्राम एल०एस०डी० उन्हें खाने को दिया। हो सकता है कि पिछली बार यह दवा उन्होंने फेंक ही दी हो। मेरे मस्तिष्क को पढ़ लिया हो और मेरा भ्रम दूर करने के लिए गोलियाँ खाई हों। हो सकता है कि उन्हें भान ही न हो कि ये गोलियाँ कितनी तेज हैं। रिचर्ड पश्चात्ताप और ग्लानि से अत्यन्त दु:खी थे, परन्तु जब पुन: उन्होंने महाराजजी की ओर देखा तो महाराजजी उन्हें पूर्णत: सामान्य दिखाई दिए और वे घड़ी को देख रहे थे।

एक घण्टा बीत चुका था। दवा की प्रतिक्रिया का नामोनिशान नहीं था। तब महाराजजी ने पूछा : ''क्या इससे भी कोई तेज दवा तुम्हारे पास है''

—नहीं।

—''बहुत पहले कुल्लू घाटी में इनका प्रयोग होता था। परन्तु अब योगियों को इनकी जानकारी नहीं। इनके सेवन से मन ईश्वर में पूरी तरह लग जाता था परन्तु बहुत से योगी इनका सेवन नहीं करते थे।'' उस दिन यह चर्चा यहीं समाप्त हो गई।

फिर एक दिन रिचर्ड ने पूछा कि क्या मैं एल०एस०डी० की गोलियों को लूँ। तो महाराजजी ने कहा कि : ''गर्मी के मौसम में इन्हें नहीं लेना चाहिए। यदि शीत ऋतु हो, शान्त वातावरण हो, तुम अकेले हो, तुम्हारा ध्यान ईश्वर की ओर उन्मुख हो तो तुम पोगियों की दवा ले सकते हो। एल०एस०डी० संसार के लिए अच्छी हो सकती है परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं। दवा लेने के बाद तुम प्रभु के कमरे में जाओगे और उन्हें प्रणाम भी करोगे, परन्तु दो घण्टे

बाद वहाँ से उठकर चल दोगे। उत्तम ओषधि है प्रभु से प्यार। एल०एस०डी० सच्ची समाधि नहीं है।''

एक बार एक साधु ने डॉ० रिचर्ड से बात चलाई और उन्हें पश्चिमी लोगों के लिए उपयुक्त मन्दिर बनाने की बात कही। जब इस सम्बन्ध में उन्होंने महाराजजी से पूछा तो उन्होंने कहा कि वह साधु आपसे घनिष्ठ सम्बन्ध तो स्थापित करना चाहता है पर उसका उपहार सच्चा नहीं। यदि सच्चा होता तो वह आपको जमीन दे देता, देने की बात न चलाता। महाराजजी रिचर्ड को अब रामदास के नाम से पुकारने लगे थे। वे कहते : ''रामदास, आसक्ति का त्याग करो।'' रामदास कहते : ''महाराजजी, यह तो आपकी कृपा से ही छूट सकती है।'' महाराजजी झिड़की-भरे स्वर में कहते : ''यह सब लगाव छोड़ो। तुम्हें आश्रम नहीं बनाने चाहिए। किसी तरह का बन्धन नहीं रखना चाहिए।''

फिर महाराजजी ने रिचर्ड से पूछा : ''क्या तुम्हारे मन में भी इच्छाएँ हैं?''

—हाँ, महाराजजी। कुछ लगता तो ऐसा ही है।

—तब मैं तुम्हें इच्छाओं से मुक्त कैसे कर सकता हूँ?

एक दिन रिचर्ड एकान्त में एक महिला भक्त से घुल-मिलकर बातें कर रहे थे कि सहसा वहीं महाराजजी पहुँच गए। रिचर्ड को अत्यन्त ग्लानि हुई। महाराजजी ने उस स्त्री की ओर संकेत करते हुए रिचर्ड से कहा : ''इन्हें आप बहुत अच्छी शिक्षा दे रहे हैं।'' फिर उन दोनों से उन्होंने कहा : ''आप दोनों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।'' इसके बाद महाराजजी किसी अन्य विषय की चर्चा करने लगे। रिचर्ड सोच नहीं पा रहे थे कि यह सब हो क्या रहा है?

सभी मन्दिरों में स्त्रियों और पुरुषों के शयन की अलग-अलग व्यवस्था होती थी। यदि वे पति-पत्नी हों तो अवश्य एक कक्ष में सो सकते थे। जब भी अधिक भक्त आश्रम में आ जाते थे तो महाराजजी उन्हें पास के वन विभाग के बँगले में सोने के लिए भेज दिया करते थे। वहाँ दो कमरे थे। एक दिन महाराजजी ने दो पुरुषों और दो स्त्रियों को वहाँ सोने के लिए भेज दिया। इनमें से दो पति-पत्नी थे और दो सामान्य स्त्री-पुरुष। रिचर्ड ने सोचा कि एक कमरे में दो स्त्रियाँ सो जाएँगी और दूसरे कमरे में दो पुरुष। भारतीय सभ्यता की यही रीति है। दूसरे दिन रिचर्ड को पता चला कि वे स्त्री-पुरुष एक ही कमरे में सोए थे, तो इन्होंने अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि यह बात सभ्य लोगों के आचरण के विपरीत है। फिर सभी लोग महाराजजी के पास पहुँचे। महाराजजी ने पूछा कि किस-किस कमरे में कौन-कौन सोया था? उन्हें बतलाया गया तो उन्होंने बस इतना कहा : —बहुत ठीक।

महाराजजी ने अनेक बार रिचर्ड को बतलाया था कि स्त्री को कभी मत छुओ। ''रामदास तुम्हारे लिए स्त्रियाँ साँप की तरह हैं।'' सच्चाई यह है कि महाराजजी ने यह जानते थे कि सभी स्त्रियाँ रिचर्ड की दृष्टि में मातातुल्य नहीं हैं। इसी भय के कारण रिचर्ड स्त्रियों के बजाय पुरुषों से ही अपना सम्बन्ध रखा करते थे। फिर भी महाराजजी की चेतावनी का विशेष प्रभाव उन पर न पड़ा।

परन्तु प्राय: जब महाराजजी के दर्शन के लिए रिचर्ड आते तो महाराजजी उनकी ओर उँगली करके कहते, ''कंचन और कामिनी।'' रिचर्ड अब तक जान चुके थे कि अनेक भारतीय सन्तों ने धन और स्त्री को आत्मज्ञान के मार्ग के गड्ढे कहा है। परन्तु फिर भी वे अपनी कमजोरी छोड़ नहीं सके थे। ऐसा लग रहा था कि अब वे आत्मबोध के रास्ते पर हैं और देर-सबेर इनका अन्त निश्चित है फिर भी अभी उनके मन में धन तथा स्त्री के सुख-भोग की थोड़ी कामना बाकी थी ही।

परन्तु महाराजजी इस विषय में नरम रुख अपनाने वाले नहीं थे। दिन में उन्हें उस समय कई-कई बार बुला लेते थे जब कभी वे मन्दिर के पिछवाड़े होते। हर बार वे महाराजजी के आगे नतमस्तक होते और हर बार महाराजजी उनकी ओर उँगली उठाकर कहते कंचन-कामिनी। और तब रिचर्ड को वापस भेज देते। ऐसा स्पष्ट रूप से लक्षित होता था कि वे रिचर्ड को चेतावनी दे रहे हों। पर रिचर्ड इसे मामूली डाँट भरकर समझकर रह जाते। परन्तु ऐसा नहीं कि वे इस वासना से बचने के लिए प्रयत्नशील न हों। वे अवश्य प्रयत्नशील थे। उन्होंने अनेक आयोजनों में इस वासना की आहुति भी दी और ईश्वर से अपने को उससे बचाने के लिए प्रार्थना भी की। परन्तु वास्तविकता यह थी कि उनका पिण्ड उस वासना से अभी छूटा नहीं था। 1974 की बात है कि सूक्ष्म शरीरधारी एक स्त्री आध्यात्मिक शिक्षिका के रूप में रिचर्ड के पास आई और उनसे कहा कि मुझे महाराजजी ने आपके पास भेजा है, जिससे मैं आपको अध्यात्म सम्बन्धी शिक्षा दे सकूँ। दोनों यौन-सम्बन्धी तांत्रिक क्रियाओं में व्यस्त हो गए। इसके बाद उनकी कामिनी सम्बन्धी लालसा का सदा के लिए अन्त हो गया और जिससे वे पिण्ड छुड़ाना चाहते थे उससे उनका पिण्ड छूट गया।

उन तांत्रिक क्रियाओं के दौरान उस स्त्री के लिए अपने शरीर में बने रहना बहुत कठिन प्रतीत हो रहा था। लगता था कि उसकी चेतना कहीं और उड़ती जा रही है। ऐसा सुझाया गया था कि इसे आभूषणों के द्वारा नियन्त्रण में लाया जा सकता है। उन्होंने निश्चय किया कि इसे सोने का कंगन और अँगूठी ले दूँ। वे सर्राफा की दुकान पर पहुँचे। वहाँ महाराजजी के शब्द उनके कानों में गूँज उठे : ''कंचन-कामिनी''। थोड़ी देर बाद उन्हें लगा कि स्त्री के प्रति जो भय था वह

गायब हो गया है। स्त्री के प्रति उनकी लालसा जाती रही और जैसे अब वे अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हों। उन्होंने उस स्त्री की शिक्षाओं को त्याग दिया। उन्हें यह प्रतीत हुआ कि महाराजजी की कृपा से ही उस स्त्री से मेरा सम्बन्ध हुआ था और उन्हीं की कृपा से उससे पिण्ड भी छूटा।

❑ ❑ ❑

एक दिन पचास या साठ कांग्रेसी राजनीतिज्ञों का दल महाराजजी के दर्शनों के लिए आ रहा था। महाराजजी हनुमान मन्दिर में ठहरे हुए थे। वहाँ से दूर तक सड़क का रास्ता दिखाई देता था। इस प्रकार उन्हें पता था कि वे लोग आ रहे हैं। महाराजजी बिना किसी से कुछ कहे वहाँ से एकाएक उठे और पहाड़ी से नीचे उतर गए और एक भारतीय साधु तथा रामदास को साथ लेकर पैदल ही देवी मन्दिर तक चले गए। जब वह दल वहाँ पहुँचा तो उसके लोगों ने महाराजजी के सम्बन्ध में जानकारी चाही। जिस रास्ते से महाराजजी पहाड़ी से उतरे थे उस ओर इंगित कर दिया गया और वह दाल उस ओर हो लिया। महाराजजी और रामदास देवी के चबूतरे पर ठीक आगे की ओर विराजमान हो गए। वह कांग्रेसी दल वहाँ पहुँचा और महाराजजी से कुल छह फुट की दूरी पर था परन्तु उनके दर्शन उसे न हुए। न उस दल को महाराजजी ही दिखाई पड़े और न रामदास ही। वे आपस में बातें कर रहे थे कि "नीब करौरी बाबा" कहाँ चले गए। जबकि बाबा ठीक उनके सामने बैठे हुए थे। महाराजजी ने स्वयं को भी उनकी दृष्टि से ओझल कर लिया था और रामदास को भी। रामदास चरस आदि का सेवन करता था जिसके कारण उसे खाँसी भी आया करती थी। इतने में उसे दौरा आया और वह खाँसना चाहता था परन्तु उसने डर से खाँसी रोकी कि खाँसी से उन कांग्रेसियों को पता चल जाएगा कि महाराजजी यहाँ हैं। महाराजजी ने रामदास से कहा चिन्ता मत करो, खाँसी रोको मत, जितना चाहो खाँसो। तब वह जोर-जोर से खाँसने लगा और उसे खाँसने से कुछ राहत भी मिली। परन्तु वे लोग न तो उन दोनों की बात ही सुन सके और न खाँसी की आवाज ही। फिर कांग्रेसी दल बिना दर्शन किए वहाँ से चल पड़ा और तब उसके बाद महाराजजी फिर प्रकट हो गए।

❑ ❑ ❑

1968 की बात है, रिचर्ड कुछ दिनों से कैंची आश्रम में ही थे। किसी कारणवश उन्हें दिल्ली जाना पड़ा। उन दिनों ब्रह्मचारियों की तरह रह रहे थे। वे नंगे पाँव चलते थे तथा भगवा वस्त्र धारण करते थे। अपना काम-काज खत्म करके तथा कैंची रवाना होने से पहले वे एक शाकाहारी भोजनालय में गए।

दोपहर का समय था। भूख उन्हें लगी ही थी। भोजन किया। भोजन के उपरान्त उनके सामने दो बिस्कुट और एक चाय का प्याला आया। उन्होंने सोचा कि ये बिस्कुट योगियों के खानेयोग्य नहीं हैं परन्तु वे क्रीम वाले बिस्कुट थे और इस प्रकार वे लोभ-संवरण न कर सके। उस रेस्तराँ में उनका सम्मान योगियों-सा ही हुआ था फिर भी उन्होंने मुँह छिपाकर बिस्कुट खा लिए। इसके बाद जैसे ही वे आश्रम पहुँचे तो महाराजजी ने छूटते ही पूछा : ''बिस्कुट खाने में कैसे थे।''

❑ ❑ ❑

जब वृन्दावन का मन्दिर बनकर तैयार हुआ तब महाराजजी ने भवनिया नामक लड़के को उसका पुजारी नियुक्त किया। यह लड़का ब्राह्मण नहीं था और न ही इसे पूजा के विधि-विधान का ही कुछ ज्ञान था। महाराजजी ने एक पण्डित को बुलवाया और कहा कि इस लड़के को पूजा-अर्चना सिखला दो। महाराजजी ने उसे बाजार भेजा कि एक जनेऊ तथा एक तुलसी की माला ले आओ। महाराजजी ने अपने हाथों से माला और जनेऊ उसे पहनाया और कहा कि जाकर हनुमानजी की पूजा करो और फिर वह वहाँ का पक्का पुजारी बन गया।

महाराजजी एक दिन कहीं बाहर गए थे कि आश्रम में एक सज्जन आए। उन्होंने मन्दिर का निर्माण कराया था। उस पुजारी से उन्होंने जात पूछी और साथ ही संस्कृत के ज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्न किया। पुजारी ने कहा कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, ठाकुर हूँ। इतना सुनते ही वे उखड़ गए। इतने में महाराजजी वहाँ आ गए थे और उनको अपने पीछे आने के लिए कहा। बड़े हाल में पहुँचे। वहाँ और भी भक्त बैठे हुए थे। पुजारी के सम्बन्ध में खुली चर्चा हुई। तब महाराजजी ने पुजारी से कहा कि यदि तुम संस्कृत जानते हो तो भगवद्गीता का पाठ सुनाओ। पुजारी ने कहा : ''नहीं महाराजजी।'' महाराजजी ने कहा : ''झूठ मत बोलो।'' तब महाराजजी ने उस महाशय से कहा कि पुजारी को गीता का अट्ठारहों अध्याय कण्ठस्थ हैं। तब उस महाशय ने कहा : ''ग्यारहवाँ और बारहवाँ अध्याय सुनाओ।'' महाराजजी ने अपना कम्बल उस पुजारी के सिर पर डाल दिया और साथही अपने हाथ से उसका सिर दो-तीन बार थपथपाया। पुजारी गीता सुनाने लगा। उसका संस्कृत का उच्चारण इतना अच्छा था कि वहाँ बैठे सभी ब्राह्मण मुग्ध हो गए। वे महाशय द्रवित हो उठे और महाराजजी के चरणों में गिर गए। डेढ़ साल तक वह व्यक्ति वहाँ का पुजारी रहा। उसने फिर कभी गीता का पाठ तो नहीं किया परन्तु पूजा-प्रार्थना करने का ढंग कुछ ऐसा था कि सभी को ईश्वर-मिलन जैसे सुख की अनुभूति होती थी।

❑ ❑ ❑

एक दिन महाराजजी दाढ़ी बनवाने के लिए नाई की दुकान पर गए। नाई ने दाढ़ी बनाते-बनाते कहा : ''बहुत दिनों से मेरा लड़का घर से भागा हुआ है और उसका अभी तक कुछ पता नहीं लगा।''

वह नाई अपने बच्चे के वियोग से अत्यन्त दुःखी तथा चिन्तित था। महाराजजी की अभी आधी ही दाढ़ी बनी थी और आधे हिस्से पर अभी साबुन लगा ही था कि उन्होंने कहा : ''मुझे अभी बाहर जाना है।'' और वे आधी दाढ़ी बिना बनवाए ही वहाँ से बाहर निकल गए और थोड़ी देर बाद लघुशंका करके फिर दुकान में आकर शेष दाढ़ी बनवाई और दाढ़ी बनवाकर फिर चल दिए। दूसरे दिन नाई के पास उसका लड़का आ गया और उसने एक विचित्र कहानी सुनाई। उसने बताया कि मैं यहाँ से कोई सौ मील की दूरी पर एक होटल में काम करता था। कल वहाँ उस होटल में दौड़ा-दौड़ा एक वृद्ध मेरे पास आया। उसकी आधी दाढ़ी बनी थी। उसने मुझे रुपए दिए और कहा कि तुम पिता के पास आज ही गाड़ी से लौट जाओ।

❑ ❑ ❑

किस्सा भूमियाधार का है। महाराजजी वहीं ठहरे हुए थे। सब लोगों ने सायं का भोजन किया और साढ़े दस बजे के करीब सब लोग सो भी गए। रात को एक बजे महाराजजी ने शोर मचाया कि मुझे जोर से भूख लगी है और मेरी दाल और चपाती खाने की इच्छा है। महाराजजी को सेवादार ने स्मरण कराया कि आप तो पहले ही भोजन कर चुके है। परन्तु वे माने नहीं और उन्होंने कहा कि मैं दाल और चपाती खाऊँगा। ऐसे महापुरुषों का रंग-ढंग कम ही समझ में आ सकता है। फिर सेवादार ने ब्रह्मचारी बाबा को उठाया, उसने आग जलाई तथा खाना बनाया। दो बज चुके थे। महाराजजी ने भोजन किया और आश्रम के लोग उन्हें देखते रहे।

दूसरे दिन सुबह 11 बजे के लगभग एक तार आया जिसमें लिखा था कि महाराजजी ने अमुक भक्त का रात दो बजे निधन हो गया। जब यह तार महाराजजी को सुनाया गया तो उन्होंने कहा : ''देखा, मैंने रात को चपाती और दाल क्यों खाई थी।''

कुछ दिन बाद महाराजजी ने इस बात को स्पष्ट करते हुए कहा : ''मरते समय मेरे भक्त की इच्छा दाल और चपाती खाने की थी। मैं नहीं चाहता था कि मेरा यह भक्त इच्छा लिये हुए प्राण त्यागे।''

❑ ❑ ❑

एक भक्त की पत्नी को युवावस्था से ही चेहरे तथा आँखों पर लकवे का गहरा असर हो गया था। वह इतनी दुःखी थी कि आत्महत्या करना चाहती थी।

एक दिन पति-पत्नी अलग-अलग पलंग पर सोए थे। रात के साढ़े तीन बजे दोनों को एक साथ महाराजजी के दर्शन हुए। पत्नी ने पति से कहा : "उठिए, महाराजजी आए हैं, उनके लिए चाय की व्यवस्था करें।" पति उठे परन्तु वहाँ कोई नहीं था। फिर उन दोनों को नींद नहीं आई। चाय बनी और उन दोनों ने पी भी। एकाएक पति ने जब पत्नी की ओर देखा तो उसकी पलकें फिर से झपकने लगीं और चेहरा बहुत-कुछ सही दिखने लगा था। वे स्वस्थ हो चुकी थीं। बाद में डॉक्टर ने कहा : "यह अनहोनी हुई है। ईश्वर की कृपा लगती है।"

❑ ❑ ❑

कानपुर के एक भक्त परिवार का एक व्यक्ति सेना में था और वह भारत-चीन युद्ध में गया हुआ था। एक सूचना आई कि उसकी मृत्यु हो गई है। और यह सूचना उसके भाई ने जब महाराजजी को दी तो उन्होंने कहा : "नहीं, वह मरा नहीं है।"

किसी ने भी उस समय महाराजजी पर विश्वास नहीं किया। छह महीने बाद उसकी विधवा ने पुनर्विवाह भी कर लिया और युद्ध विभाग की फाइल बन्द हो गई। परन्तु कुछ समय बाद वह आदमी घर लौट आया।

❑ ❑ ❑

1943 में महाराजजी फतेहगढ़ आए थे। वहाँ एक वृद्ध सज्जन अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उनका लड़का बरमा की लड़ाई में गया हुआ था। जब महाराजजी उनके यहाँ पहुँचे तो उन दोनों ने महाराजजी का यथाशक्ति सत्कार किया। उनके यहाँ दो ही चारपाइयाँ थीं। महाराजजी ने कहा कि मैं अभी सोना चाहता हूँ। उन्हें एक चारपाई दे दी गई और उन पर वे दोनों दृष्टि लगाए रहे। महाराजजी सुबह चार बजे तक चारपाई पर पड़े-पड़े कराहते रहे। साढ़े चार बजे उन्हें चैन पड़ा। तब उन्होंने चारपाई से चादर उठाई और उसमें कुछ लपेट दिया और उस वृद्ध सज्जन से कहा : "इसे खोलकर देखना मत, सीधे गंगा में किसी गहरे स्थान पर ले जाकर फेंक आओ।" और साथ ही यह भी कहा : "यह काफी भारी है, इसे ध्यान से ले जाना और इसे इस प्रकार ले जाना कि तुम्हें कोई देखे नहीं। अन्यथा पुलिस तुम्हें पकड़ लेगी।" जब वह सज्जन उस पोटली को गंगा की ओर ले जा रहे थे तो उन्हें छूने पर ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे इसमें गोलियाँ हों।

जब वे सज्जन गंगा में पोटली फेंककर आए तो महाराजजी ने उनसे कहा : "घबराओ मत, तुम्हारा लड़का एक महीने तक लौट आएगा।" जब लड़का लौटा तो उसने बताया कि "मैं करीब-करीब मर ही चुका था। हमारे

दलपर दुश्मन ने घात लगाया था और संयोगवश मैं खाई में गिर पड़ा था। गोलियाँ मेरे दाहिने-बाएँ से निकलती रहीं फिर वे वहाँ से वापस लौट गए। साढ़े चार बजे वहाँ भारतीय जवान पहुँचे और और उन्होंने मुझे खाई से निकाला। मैं ही उस दल में से अकेला जीवित बचा था।''

यह ठीक उसी रात की बात है जिस रात महाराजजी फतेहगढ़ में ठहरे थे और रात भर कराहते रहे।

□ □ □

बहुत पुरानी बात है। एक अमेरिकन स्त्री लन्दन आई हुई थी। वह एक बस से कहीं जा रही थी। उस बस में बहुत सी सीटें खाली थीं। पट्टू का कम्बल बगल में दबाए एक वृद्ध सज्जन उस बस पर चढ़ा और उसने उसके बगल वाली सीट पर बैठने की इच्छा व्यक्त की जो खिड़की से सटी हुई थी। उस महिला को यह बात तो अच्छी नहीं लगी। परन्तु बात रखने के लिए उस वृद्ध सज्जन को खिड़की वाली सीट पर बैठने दिया। जैसे ही उस वृद्ध सज्जन ने अपनी मधुर और मन्द मुस्कान उस महिला पर फेंकी तो वह निहाल हो उठी और अपने मन में सोचने लगी कि यह भला आदमी आखिर है कौन। इससे पहले कि अगले स्टॉप पर बस रुकती, उस महिला ने चारों ओर आँखें दौड़ाई पर वह वृद्ध कहीं दिखाई न पड़ा।

वह वृद्ध जब से बस पर चढ़ा था तब से बस रास्ते में कहीं रुकी नहीं थी, इसलिए उसके उतरने का प्रश्न ही नहीं उठता था। उस महिला के बिना सीट से हटे वह वृद्ध उठकर कैसे, कब और कहाँ चला गया, यह सोच-सोचकर वह बहुत अधिक हैरान थी।

कुछ समय बाद एक मित्र के बुलावे पर वह महिला भारत आई। मित्र के पास उन्होंने महाराजजी का चित्र देखा। वह उसी व्यक्ति का फोटो था जो पट्टू का कम्बल बगल में दबाए उन्हें लन्दन की एक बस में मिला था।

□ □ □

एक सज्जन महाराजजी के दर्शनों के लिए आए और साथ में भेंट करने के लिए कुछ सन्तरे भी लाए। महाराजजी ने पास पड़ी एक खाली टोकरी में वे सन्तरे रख दिए और फिर कमरे में बैठे हुए एक व्यक्ति को तथा मन्दिर में हर आने वाले को उसी टोकरी में से निकाल-निकाल कर सन्तरे देने लगे। वे सज्जन आठ सन्तरे लाए थे और महाराजजी ने अट्ठावन सन्तरे बाँटे थे।

□ □ □

स्वामी शिवानन्द की गिनती भारत के महान् सन्तों में होती थी। वे ऋषिकेश में बहुत बड़ा आश्रम छोड़कर गए थे जिसमें उनके अनेक चेले रहते

थे। महाराजजी प्रायः बिना किसी पूर्व सूचना के वहाँ चले जाया करते थे। जब भी महाराजजी वहाँ जाते थे, कोई न कोई ऐसी घटना वहाँ घटा ही करती थी जिसे आश्रमवासी बहुत दिनों तक याद रखा करते थे। कभी-कभी उस आश्रम के प्रमुख अपने हाथ से महाराजजी के लिए भोजन भी तैयार करते थे। एक बार महाराजजी ने एक अत्यन्त आदरणीय तथा उच्च कोटि के वृद्ध स्वामी को बुलाया। ये स्वामीजी सिवाए शिवानन्दजी के किसी और सन्त को कुछ गिनते नहीं थे और अब भी उन्हीं की स्मृति की ही आराधना करते थे। वे महाराजजी के आगे भी नहीं झुकते थे। जब वे महाराजजी के पास पहुँचे तो महाराजजी ने कहा : ''वेदव्यासजी आ गए हैं।'' महाराजजी के मुख से इन शब्दों का निकलना था कि वे स्वामीजी उनके चरणों पर लोटने लगे। फिर वे दोनों एक दूसरे को सही रूप में पहचानने लगे।

शिवानन्द आश्रम से एक दिन एक महात्मा महाराजजी के पास आए। महाराजजी ने उन्हें पूरियाँ खिलाईं और मन्दिर के पीछे स्थित गुफा में बैठने के लिए कहा। वे स्वामी महाराजजी से इतने अभिभूत थे कि थोड़ी देर में फिर उनके पास चले आए। महाराजजी ने उन्हें पेड़ के नीचे बैठने के लिए कहा। यहाँ से वे महाराजजी को बराबर देख सकते थे। थोड़ी देर में वे क्या देखते हैं कि कैंची आश्रम ऋषिकेश के शिवानन्द आश्रम में बदल गया है और महाराजजी ने शिवानन्द का रूप धारण कर लिया है। शिवानन्द के रूप में महाराजजी चलकर उस स्वामी के पास आए और कहने लगे : ''क्या आपको हम दोनों में अन्तर दिखाई देता है ? क्या हम दोनों एक नहीं हैं ?''

स्वामीजी ने कहा : ''आप ही तो उस रूप में भी थे। सचमुच आप दोनों एक हैं। आप इस रूप में मुझे भ्रमित कर रहे हैं।'' महाराजजी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। बस मुस्कुराकर रह गये।

□ □ □

एक दिन महाराजजी लखनऊ से कुछ अधिकारियों को हाथ लेकर एक बहुत ही गन्दे मुहल्ले में गए। सम्भवतः यह दिखाने के लिए कि जैसे गरीबों की सुध लेना उच्चाधिकारी जानते ही न हों। फिर वे एक छोटी सी कुटिया के आगे रुके और आवाज लगाई ''ओ मुस्लमान।'' अन्दर से एक सज्जन निकले। दोनों ने कसकर एक-दूसरे को गले लगाया। फिर महाराजजी ने उस मुस्लमान सज्जन से कहा : ''मुझे बहुत भूख लगी है।''

—पर महाराजजी, मेरे पास तो कुछ खाने को है ही नहीं।

—आप बहुत पाखण्डी हैं। आपने झोपड़ी की छत में दो रोटियाँ खोंस रखी हैं।

वह इतना सुनते ही सकपका गया। उसकी समझ में न आया कि महाराजजी को कैसे पता चला कि मैंने दो रोटियाँ छत में छिपा रखी हैं। वह मुस्लमान दोनों रोटियाँ ले आया। यद्यपि महाराजजी और उच्चाधिकारियों ने अभी कुछ देर पहले ही भोजन किया था, तो भी महाराजजी ने एक रोटी बड़े स्वाद से स्वयं खाई और दूसरी रोटी के टुकड़े किए और एक-एक टुकड़ा सभी अधिकारियों को देते हुए कहा कि प्रसाद लीजिए। इन प्रसाद लेनेवालों में से कई ब्राह्मण भी थे जो मुस्लमान के हाथ का छुआ तक नहीं खाते थे।

❑ ❑ ❑

1940 की बात है कि एक मुस्लमान आई०सी०एस० अधिकारी का लड़का इंग्लैण्ड गया था और वहाँ जाकर बीमार पड़ गया। लड़के की माँ उसे देखने के लिए इंग्लैण्ड गयी थी। महाराजजी अपने एक ऐसे भक्त के यहाँ ठहरे हुए थे जिन्होंने कभी कुछ नहीं माँगा था। परन्तु उस बीमार बालक की चर्चा उन्होंने उनसे अवश्य की क्योंकि उन दोनों परिवारों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध था। इससे पहले की वे सज्जन महाराजजी से कुछ प्रश्न करते, महाराजजी ने स्वयं ही पूछ लिया : "तुम उस लड़के के बारे में तो नहीं पूछना चाहते हो जो इंग्लैण्ड पढ़ने के लिए गया है। उसके बारे में क्या पूछना चाहते हो। उसकी माँ वहाँ पहुँच गयी है। तुम उसे हवाई अड्डे पर छोड़ने गए थे। जैसे ही उसकी माँ उसके पास पहुँची, उसकी हालत सुधरने लगी।"

इस बात की बाद में पुष्टि हुई कि उसकी माँ के लन्दन पहुँचने के साथही उसकी हालत में सुधार होने लगा था।

❑ ❑ ❑

महाराजजी के एक भक्त की एक वर्ष की लड़की तीस फुट ऊँची खिड़की से नीचे गिर पड़ी थी। उसे जरा भी चोट न लगी। उसका बाल तक बाँका नहीं हुआ। दूसरे दिन उसके माता-पिता को जब यह सूचना मिली कि महाराजजी कैंची आश्रम आए हैं तो वे उस बच्ची को लेकर महाराजजी की सेवा में उपस्थित हुए। महाराजजी ने उनसे कहा : "यह लड़की ठीक हो जाएगी।" जब यह लड़की दो वर्ष की हुई तो वह उसी घर की किसी दूसरी खिड़की से फिर तीस फुट की ऊँचाई से गिर पड़ी। इस बार भी उसे कोई चोट न आई। सम्भवतः उसी दिन महाराजजी कैंची पधारे थे। अतः उस बालिका के माता-पिता उसे डॉक्टर के पास न ले जाकर सीधे महाराजजी के पास ले गए। महाराजजी ने यों ही कह दिया : "कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा।" इसे संयोग ही कहिए कि जब वही बालिका तीन वर्ष की हुई तो एकबार फिर उसी तरह गिर पड़ी। इस बार गिरने की स्मृति उसे आज भी है। उसने कहा कि जब मैं गिर रही थी तो

ऐसा लग रहा था कि मैं तैरते हुए नीचे उतर रही हूँ। इस बार जब उसके माता-पिता उसे महाराजजी के पास ले गए तो महाराजजी ने कहा : "मैं इसे मरने नहीं दूँगा।"

❑ ❑ ❑

एक दिन छत पर से एक भक्त परिवार का आठ महीने का बालक नीचे गिर पड़ा। उस समय उसका बड़ा भाई तथा घर का नौकर पतंग उड़ाने में निमग्न थे। लड़का तीस फुट से नीचे संगमरमर के फर्श पर गिरा था। गिरने के बाद लड़का हिला-डुला नहीं। फिर डॉक्टर के पास उसे ले गए। डॉक्टर ने उसे देखा-परखा तो बालक मुस्कुराने लगा। बालक को खरोंच तक नहीं लगी थी। डॉक्टर ने कहा कि यह लड़का कैसे बच गया, यह बात समझ में नहीं आती। कुछ दिनों बाद महाराजजी उस परिवार में आए और कहने लगे : "आपको पता ही नहीं कि आपकी पीठ पीछे कौन है जो आपकी रक्षा करता है। बच्चा जमीन पर नहीं गिरा था, वह तो मेरी गोद में गिरा था।"

❑ ❑ ❑

एक दिन एक साधारण व्यक्ति अपनी मुराद पूरी कराने के उद्देश्य से महाराजजी के पास आया था। वह मन्त्री बनना चाहता था। महाराजजी ने कहा : "आप मन्त्री बन जाएँगे। यह प्रसाद ले जाओ।" इस घटना के कई वर्ष बाद एक दिन महाराजजी कैंची आश्रम में घण्टों समाधि लगाए हुए बैठे थे। महाराजजी का एक भक्त भी उनके पास बैठा हुआ था। फिर एकाएक उन्होंने आँखें खोलीं। किसी का नाम लेकर जोर से पुकारा। पन्द्रह मिनट बाद एक कार कैंची आश्रम के द्वार पर पहुँची। उस कार पर तिरंगा फहरा रहा था। महाराजजी ने अपने भक्त से कहा कि पहले उसे प्रसाद दे दो फिर उसे अन्दर बुलाओ। प्रसाद पाने के बाद वह व्यक्ति अन्दर आया। उसने कहा : "महाराजजी, मैं एक बार पहले भी आपके पास आया था। आपने मुझसे कहा था कि मैं मन्त्री बनूँगा। अब मैं मन्त्री बन गया हूँ। आपकी कृपा से यह सम्भव हुआ है। पदग्रहण करने से पहले मैंने आपके दर्शन करना और आपकी चरण-धूलि माथे पर लगाना आवश्यक समझा। यहाँ से लौटने के बाद ही मन्त्री का पद ग्रहण करूँगा।"

❑ ❑ ❑

दो बहनें थीं जिन्हें महाराजजी पर अत्यन्त श्रद्धा थी। उनमें से एक स्नानगृह में गई और जब नहाकर निकली तो भाव-विह्वल या समाधि-मगन-सी निकली और यह कहते हुए निकली : "मुझे अभी-अभी महाराजजी के स्नानगृह में दर्शन हुए हैं।" उस समय महाराजजी सैकड़ों मील दूर थे। जब

दूसरी बहन दौड़े-दौड़े स्नानगृह में गई तो वहाँ उसे विशाल नाग महाराजजी के दर्शन हुए।

❑ ❑ ❑

बात नीब करौरी गाँव की है। उन दिनों वहाँ महाराजजी गुफा में रहकर समाधि लगाया करते थे। एक स्त्री गुफा में प्रविष्ट हुई तो क्या देखती है कि महाराजजी के शरीर में कई साँप लिपटे हुए हैं। उसने कहा कि अगर अन्दर साँप होंगे तो मैं गुफा में नहीं आया करूँगी। महाराजजी ने उसे अन्दर बुलाया और उससे कहा : "घबराओ मत।" देखते-देखते सभी साँप उनके शरीर में समा गए।

❑ ❑ ❑

एक भगत श्री युधिष्ठिरजी को कार में भूमियाधार लाया। फिर वे पास के झरने पर स्नान करने के लिए चले गए। वहाँ से दौड़े-दौड़े आए और महाराजजी से कहने लगे कि मुझे साँप ने काट लिया है। इतना कहते-कहते ही वे बेसुध होकर गिर पड़े। साँप के काटने से उनका हाथ नीला पड़ गया था। महाराजजी ने ब्रह्मचारी से कहा कि कम्बल बिछा दो और युधिष्ठिर को उस पर लिटा दो। तब उन्होंने ब्रह्मचारी से कहा कि पानी का गिलास ले आओ। फिर उस गिलास को महाराजजी ने अपने कम्बल में कुछ देर ढ़ँके रखा। फिर महाराजजी चिल्लाए : "इसे साँप ने काट लिया है अब क्या होगा?" युधिष्ठिर बेसुध पड़े थे। फिर जब महाराजजी ने उस पर जल छिड़का तो वे उठकर बैठ गए।

❑ ❑ ❑

दादा मुकर्जी का भांजा बीमार था। उसे छोटी माता निकल आई थीं। एक दिन उसकी हालत एकाएक बिगड़ गई। फिर उसे जमीन पर उतार दिया गया। लगता था कि क्षण दो क्षण ही उसका जीवन शेष है। किसी ने सुझाव दिया कि महाराजजी का चरणामृत इसके मुँह में डाला जाए। जब ऐसा किया गया तो बालक उठकर बैठ गया और अगले ही दिन उसका रोग भी दूर हो गया।

ठीक उसी समय मीलों दूर पहाड़ पर बैठे महाराजजी के सारे शरीर पर एकाएक दाने निकल आए। उस समय सिद्धि माँ भी महाराजजी के साथ थीं। पहाड़ों पर यह रोग जल्दी नहीं होता। इसलिए वहाँ के लोगों की समझ में न आया कि महाराजजी का कौन-सा उपचार किया जाए। उन्होंने इसे एलर्जी समझा और लगाने की दवा ले आए। दूसरे ही दिन सब दाने दूर हो गए। और महाराजजी ने कहा : "यह दवा चमत्कारी थी। पता नहीं वह दाने क्या हुए। हो सकता है कि किसी चीज से मुझे एलर्जी हुई हो।"

❑ ❑ ❑

एक परिवार मन्दिर में आया हुआ था। उसमें दादा-दादी भी थे। जब वे लोग महाराजजी के समक्ष उपस्थित हुए तो महाराजजी ने दादाजी से कहा : ''हमारी आपसे भेंट पहले भी हो चुकी हैं।'' दादाजी ने कहा : ''मुझे याद नहीं पड़ता। मुझे तो लगता है कि आज पहली बार आपके दर्शन कर रहा हूँ।'' पर महाराजजी अपनी बात पर अड़े रहे। फिर महाराजजी ने कुछ देर के लिए आँखें बन्द कर लीं और फिर कहा : ''आपको याद नहीं कि रेलवे स्टेशन पर आपने मेरा बिस्तर उठाया था।''

पहे तो दादाजी को लगा कि महाराजजी को मुझसे किसी और का धोखा हुआ है, परन्तु फिर जब याद आया कि जब मेरी अवस्था ग्यारह या बारह वर्ष की थी तो कई लड़के मास्टरों के साथ साइकिलों से किसी यात्रा पर निकले थे। उन दादाजी की साइकिल रास्ते में टूट गई थी और उनके साथी उन्हें अकेला छोड़कर आगे बढ़ गए थे। साइकिल बनवाने के लिए कुछ पैसों की आवश्यकता थी पर उस समय उनके पास कुछ भी नहीं था। तब वे रेलवे स्टेशन पर यह सोचकर गए थे कि किसी मुसाफिर का सामान गाड़ी से प्लेटफॉर्म से बाहर ले जाने पर कुछ मजदूरी मिल ही जाएगी।

परेशानी यह भी थी कि बालक की अवस्था बहुत कम थी इसलिए छोटा-मोटा समान ही उठाने में वह सक्षम था। वह प्रथम श्रेणी के डिब्बे के पास जाकर खड़ा हो गया। एकाएक चमकता हुआ सूट पहने, हाथ में छड़ी लिये चमचमाते हुए जूते पहने और डर्बी हैट लगाए एक यात्री उतरा। उसके हाथ में लपेटे हुए कम्बल की गठरी थी। गठरी बहुत हल्की थी। वहाँ पहुँचने पर उस बालक को उन्होंने पाँच रुपए दिये जो उस समय की मजदूरी के हिसाब से बहुत अधिक थे। उस व्यक्ति ने उस बालक से यह भी कहा कि अगर चाहो तो कल फिर यहीं आ जाना। परन्तु बालक ने रुपया लिया, साइकिल बनवाई और अपनी यात्रा पर आगे निकल पड़ा। फिर वह कभी वहाँ नहीं आया।

□ □ □

एक बार उपराष्ट्रपति गिरि की पत्नी महाराजजी के दर्शनों के लिए आश्रम आईं। महाराजजी ने मिलने से इन्कार कर दिया। वैसे श्रीमती गिरि के आने की सूचना महाराजजी ने उनके पहुँचने से पहले ही आश्रम में दे दी थी। महाराजजी ने कहा : ''उन्हें प्रसाद दे दो।''

कुछ दिन बाद राज्यपाल अपने पुत्र के साथ महाराजजी से मिलने आए। उस समय महाराजजी विश्राम कर रहे थे। महाराजजी के विश्राम में खलल पड़ा। खैर जो भी हो राज्यपाल ने महाराजजी से पूछा कि यदि गिरि राष्ट्रपति का चुनाव लड़ें तो कैसा रहे।

बाद में चार-पाँच लोगों के साथ गिरिजी भी महाराजजी के पास आए। पन्द्रह मिनट एकान्त में महाराजजी से उनकी बात-चीत हुई। इसके बाद गिरि वहाँ से चल पड़े। दिल्ली गए और जाते ही उन्होंने उपराष्ट्रपति के पद से त्यागपत्र दे दिया। जब उनसे पूछा गया कि ऐसा क्यों किया तो उन्होंने उत्तर दिया : ''आत्मा की पुकार है।'' तब राष्ट्रपति के चुनाव में शामिल हुए। अभी मतपत्रों की गिनती आरम्भ हुई भी नहीं थी कि महाराजजी ने कहा : ''गिरि जीत गए।''

❑ ❑ ❑

भारत के प्रधानमन्त्री नेहरूजी असम जाते समय कुछ समय के लिए कलकत्ता हवाई अड्डे पर रुके हुए थे। हवाई अड्डे पर एक कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें अधिकारियों तथा पत्रकारों ने भाग लिया। नेहरूजी अपने विचार प्रकट कर ही रहे थे कि इतने में एक और हवाई जहाज आया। उसमें से यात्री निकलने लगे। कुछ क्षणों बाद नेहरूजी ने देखा कि उनकी कॉन्फ्रेन्स से बहुत से लोग उठकर उस दूसरे हवाई जहाज की ओर चले जा रहे हैं। नेहरूजी ने उस सम्बन्ध में अपने सलाहकारों से पूछा। उनमें से एक महाराजजी का भक्त भी था। उसने बतलाया कि उस जहाज में बाबा नीब करौरी आए हैं और लोग दर्शनों के लिए दौड़े चले जा रहे हैं। नेहरूजी को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा : ''हमारा भारत निश्चय ही भाग्यशाली है, क्योंकि यहाँ ऐसे बड़े-बड़े सन्त हैं, जिनके दर्शनों के लिए लोग अपने प्रधानमन्त्री को भी छोड़ जाते हैं।''

❑ ❑ ❑

बहुत दिनों से नेहरूजी की इच्छा महाराजजी के दर्शन करने की तो थी, परन्तु उनसे किसी न किसी कारण भेंट न हो पाती थी। एक दिन नेहरूजी के एक घनिष्ठ मित्र महाराजजी के पास आए। वे महाराजजी के पुराने भक्त थे। उन्होंने महाराजजी से इस सम्बन्ध में प्रार्थना की। महाराजजी ने कहा : ''मैं नेहरूजी के आवास पर चला तो जाऊँगा, परन्तु वहाँ किसी प्रकार का आयोजन या भीड़-भाड़ नहीं होनी चाहिए।''

नेहरूजी के अन्तिम दिनों में महाराजजी कहा करते थे : ''नेहरूजी अच्छे व्यक्ति हैं। वे हृदय से ईश्वर की वन्दना करते हैं। इसका प्रदर्शन नहीं करते।''

❑ ❑ ❑

1962 में जब चीन-भारत युद्ध हुआ तो सैनिक कमाण्डरों ने नेहरूजी को परामर्श दिया कि यथाशीघ्र नई दिल्ली खाली कर देनी चाहिए, क्योंकि वहाँ चीन का हमला अवश्यम्भावी है। ऐसा समझा जाता है कि नेहरूजी इस विचार के विरुद्ध थे और इस सम्बन्ध में कोई आदेश नहीं निकालना चाहते थे। भारत के इतिहास में कई बार ऐसा हुआ है कि विदेशी आक्रमण के समय राजधानी को

दिल्ली से स्थानान्तरित करना पड़ा और हर बार ऐसे मौके पर देश को पराजय झेलनी पड़ी। सैनिक कमाण्डरों ने नेहरूजी को परामर्श दिया कि 24 घण्टे के अन्दर दिल्ली खाली करने का आदेश निकाल देना चाहिए, जिससे भारी क्षति से बचा जा सके। नेहरूजी बहुत ही परेशान थे। उन्होंने महाराजजी के भक्त एक मुख्यमन्त्री को आदेश दिया कि वे इस सम्बन्ध में महाराजजी से परामर्श करें। मन्त्री महोदय ने नेहरू जी से कहा कि मुझे महाराजजी पर पूर्ण विश्वास है कि वे भविष्यदर्शी हैं और यदि वे दर्शन देना चाहते हैं तो स्वयं आ जाएँगे।

उन्होंने कहा कि यदि कोई महाराजजी को सच्चे मन से स्मरण करे तो वे कभी निराश नहीं करते। जो हो, इस भक्त मन्त्री को मालूम नहीं था कि इस समय महाराजजी हैं भी कहाँ। उसी शाम को महाराजजी का फोन नेहरूजी के इस मन्त्री के पास आया : ''इनसे कह दें कि चिन्ता की कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक हो जाएगा। चीनी सैनिक पहले ही पीछे हटने लगे हैं।'' दूसरे दिन सुबह प्रमुख कमाण्डरों ने नेहरूजी को सूचित किया कि शत्रु पीछे लौट गए हैं और लड़ाई बन्द हो गई है।

❑ ❑ ❑

मुजीब के भाई आए। इन्हें इस बात का ज्ञान नहीं था कि मेरा भाई जीवित भी है कि नहीं। बहुत से लोग यही समझते थे कि वह मर गया है, परन्तु महाराजजी ने कहा : ''चिन्ता मत कीजिए, आपके भाई आएँगे और राजा की तरह आएँगे।'' ऐसा हुआ भी और उन्हीं के नेतृत्व में बंगलादेश का निर्माण हुआ।

❑ ❑ ❑

पच्चीस वर्ष पहले की बात है। अनेक लोग महाराजजी के पास बैठे हुए थे, उनमें से कई महाराजजी के भक्त भी थे। महाराजजी ने कहा : ''आप देखेंगे कि पाकिस्तान का एक भाग भारत के साथ हो जाएगा।''

1962 में चीन-भारत-युद्ध के समय एक भक्त ने महाराजजी से कहा : ''चीन की सेना असम में प्रविष्ट हो गई है। हमारी सेना ने दर्शक की भूमिका निभाई है। यदि वह इसी प्रकार मूक दर्शक बनी रही तो चीनी सेनाएँ मैदान में उतर आएँगी।''

महाराजजी ने कहा : ''कुछ नहीं होगा। चीन की सेनाएँ वापस लौट जाएँगी। भारत ऋषियों की तपोभूमि है, यहाँ कम्युनिजम नहीं आ सकता है।''

भक्त ने फिर पूछा : ''महाराजजी, ये चीनी सेनाएँ फिर आईं ही क्यों?''

उनका उत्तर था : हमें जगाने भर को।

कुछ लोगों ने विचार प्रकट किया कि भारत का शासन चीन के हाथों में चला जाएगा। इस पर महाराजजी ने कहा ''नहीं, नहीं, यहाँ कम्युनिजम नहीं आ

सकता। यहाँ के लोग धर्मनिष्ठ तथा भक्त हैं। जिन देशों में धर्म की प्रधानता है, उन देशों में कम्युनिजम नहीं आ सकता है।''

❑ ❑ ❑

एक बार नेपाल की एक रानी महाराजजी के दर्शनों के लिए आईं। उनके पति भी महाराजजी के परम भक्त थे। उन्होंने बहुत सी वस्तुएँ महाराजजी को भेंट में दीं। परन्तु उन्होंने कहा : ''नहीं, नहीं, इन्हें गरीबों में बाँट दो।'' फिर उन्होंने पास बैठे हुए अपने एक भक्त के कान में कहा, ''इस औरत के पास बहुत धन है, क्या इससे कुछ ले लें।''

भक्त ने कहा : ''ले लीजिए।''

फिर दोनों हँस पड़े। इस तरह का उनका हँसी-मजाक था। उनके सम्बन्ध में प्राय: लोग कहा करते थे कि महाराजजी कभी पैसों को छूते तक नहीं।

महाराजजी ने एक बार कहा था : ''रुपया सीधे ढंग से ही आना चाहिए, क्या आप चाहते हैं कि मेरे नाम पर धब्बा लगे।''

❑ ❑ ❑

जब महात्मा गाँधीजी को गोली मारी गई तब चारों ओर चीख-पुकार मचने लगी थी। ब्रह्मचारी ने पूछा : ''लोग क्यों चिल्ला रहे हैं।'' जब उन्हें बतलाया गया तो उन्होंने कहा : ''देश में एक ही ऐसा व्यक्ति है जो उन्हें पुन: वापस ला सकता है और वह है नीब करौरी बाबा।''

❑ ❑ ❑

एक बार महाराजजी अपने किसी भक्त के यहाँ ठहरे हुए थे। उन्होंने अपने भक्त से कहा कि मेरे कमरे के बाहर ताला लगा दीजिए। कमरे के बाहर ताला लगा दिया गया। उस कमरे में कई खिड़कियाँ थीं, जिनमें मोटे-मोटे लोहे के सीखचे भी लगे हुए थे। थोड़ी देर के बाद वहाँ एक और भक्त आ पहुँचा और उसने आते ही पूछा : ''महाराजजी कहाँ जा रहे थे।'' गृहस्वामी ने उत्तर दिया : ''क्या कहा? वे तो कमरे में बन्द हैं।''

''ऐसा नहीं हो सकता। मैंने उन्हें अभी रिक्शे पर बैठे हुए उस तरफ जाते हुए देखा है।''

उनकी बहन ने उसी समय महाराजजी का स्वागत किया। महाराजजी ने कहा, ''मैं खिचड़ी खाऊँगा। मेरी तबियत आज कुछ ढीली है इसलिए आज मैं केवल खिचड़ी ही खाऊँगा।''

गृहस्वामी ने तब कमरे का ताला खोला और देखा तो कमरा खाली था। महाराजजी उसमें नहीं थे। कमरे की खिड़कियों के सीखचे भी सही-सलामत थे। उन्होंने कमरे को फिर बन्द करके उसी प्रकार ताला लगा दिया। लगभग एक

घण्टे के बाद कमरे के अन्दर से खटखट का शब्द सुनाई पड़ा। और इस बार जब ताला खोला गया तो महाराजजी अन्दर कमरे में विराजमान थे।

❑ ❑ ❑

कानपुर के निकट पनकी में महाराजजी के भक्तों ने हनुमानजी का मन्दिर निर्मित किया था। वहाँ मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कुछ ही दिनों में होने वाली थी। महाराजजी उन दिनों इलाहाबाद में ठहरे हुए थे और उन्होंने सबसे कह रखा था कि मैं समारोह में उपस्थित नहीं होऊँगा। समारोह के दिन इलाहाबाद में सुबह-सुबह महाराजजी ने गृहस्वामी से कहा : "मुझे कुछ समय के लिए इस कमरे में अकेला छोड़ दें और मेरे कमरे के बाहर ताला लगा दें।"

अगले दिन कुछ व्यक्ति पनकी से इलाहाबाद लौटे और जिस मकान में महाराजजी ठहरे हुए थे उसके स्वामी को भी वहाँ प्रसाद देने के लिए आए। उन्होंने प्रसाद तो दिया ही, पनकी के समारोह और भण्डारे का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया। उन्होंने यह भी कहा कि सभी कार्य ढंग से सम्पन्न हुए। वहाँ महाराजजी भी आए थे जबकि पहले से उन्होंने सबसे कह रखा था कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।

गृहस्वामी ने कहा : "ऐसा नहीं हो सकता। महाराजजी तो उस दिन यहीं इलाहाबाद में रहे।"

अभ्यागत ने कहा जो हो महाराजजी तो पनकी में भी थे। ग्यारह से बारह बजे तक तो वे मन्दिर में ही थे।

❑ ❑ ❑

नैनीताल के एक भक्त को कुछ लम्बे समय के लिए व्यापार के सिलसिले में कहीं जाना था। जाने से पहले यह सोच कर महाराजजी के दर्शन करने के लिए गया कि पता नहीं कि जब मैं वापस लौटूँ तब तक महाराजजी कहीं और न चले जाएँ। इस प्रकार उनके दर्शन शीघ्र न मिल पाएँ। जब वह महाराजजी के दर्शन करके लौट रहा था तो इसी प्रकार के विचार उसके मन में थे। वहाँ से वह सीधे स्टेशन गया। गाड़ी पर बैठा और गाड़ी चल दी और कई स्टेशनों पर रुकते हुए आगे बढ़ने लगी। फिर एक स्टेशन पर वह पानी लेने के लिए जैसे ही उतरा तो किसी ने बतलाया कि सामने नीब करौरी बाबा बैठे हुए हैं। भक्त हैरान हुआ और उसने सोचा कि मैं उन्हें नैनीताल में छोड़कर आ रहा हूँ। यह कैसे सम्भव है? फिर वह दूसरे प्लेटफॉर्म पर गया और देखा कि महाराजजी भक्तों से घिरे बैठे हैं। अनेक लोगों ने महाराजजी से बातें भी कीं। तब महाराजजी ने कहा : "जल्दी से अपनी गाड़ी पर जाओ, नहीं तो गाड़ी चल देगी। गाड़ी चलने वाली है।"

जब वह भक्त अपनी यात्रा समाप्त करके नैनीताल पहुँचा तो महाराजजी तब भी वहीं थे। सच तो यह है कि इस बीच महाराजजी नैनीताल से बाहर गए ही नहीं थे।

❑ ❑ ❑

एक दिन महाराजजी विश्राम कर रहे थे। सिद्धि माँ तथा कुछ महानुभाव भी कमरे में बैठे हुए थे। माँ तथा अन्य लोगों को भी ऐसी अनुभूति हुई कि महाराजजी कहीं चले गए हैं। कुछ समय बाद उनके शरीर में कम्पन हुआ तो माँ ने पूछा कि कहाँ चले गए थे? तो इस पर महाराजजी हँस पड़े। जब कुछ लोगों ने कह दिया कि महाराजजी बिना वायुयान के अमेरिका चले जाते हैं तो इस पर उन्होंने डाँट पिलाई और फिर हँसने लगे।

❑ ❑ ❑

एक भक्त ने कहा था कि मेरी माँ ने महाराजजी को एक ही समय में दो स्थानों पर देखा है। वे भूमियाधार में महाराजजी की ओर बढ़ रही थीं। जब उन्होंने एक और महाराजजी को देखा जो ठीक उन्हीं की तरह थे। एक सड़क के किनारे बैठे हुए थे और दूसरे जंगल में। कुछ क्षण बाद एक रूप तो तिरोहित हो गया पर दूसरे रूप से उन्होंने बात की।

❑ ❑ ❑

बात 14 जनवरी 1965 की है। मुकर्जी दादा के घर में एक बड़ा सा पूजाघर है। उस पूजाघर में एक अलमारी है जिसमें पैरों के निशान दिखाई दिए। उन लोगों का ऐसा विश्वास था कि ये चरणचिह्न महाराजजी के ही हैं। तब से वे प्रति वर्ष 14 जनवरी को वहाँ भण्डारा करते हैं। जब महाराजजी का सामना हुआ तो उनसे पदचिह्नों के बारे में पूछा गया। महाराजजी ने कहा : "मैं वहाँ गया था और मुझे देख लिया गया था।"

डॉ० रिचर्ड अमेरिका में एक नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिक वैज्ञानिक से वार्तालाप कर रहे थे। जब उस मनोवैज्ञानिक ने महाराजजी के विषय में कुछ जानने की इच्छा व्यक्त की तो रिचर्ड ने उन्हें कई किस्से सुनाए। रिचर्ड ने ऐसे किस्से भी सुनाए जिनमें महाराजजी एक ही समय में दो-दो स्थानों पर दिखाई दिए। उस भौतिक वैज्ञानिक ने कहा : "ऐसा सम्भव नहीं। भौतिक विज्ञान का यह आधारभूत सिद्धान्त है कि कोई वस्तु एक समय में दो स्थानों पर नहीं हो सकती।"

परन्तु रिचर्ड ने कहा : "सच तो यही है कि ऐसा महाराजजी ने कर दिखलाया है।"

❑ ❑ ❑

एक कर्नल जब अपने सैनिक शिविर में पहुँचे तो क्या देखते हैं कि महाराजजी मुख्य द्वार के बीचोंबीच जमीन पर लेटे हुए हैं। जब कर्नल ने उन्हें हटने के लिए कहा तो महाराजजी ने उत्तर दिया : ''यह तो ईश्वर की भूमि है और मैं सी०आई०डी० का आदमी हूँ।'' कर्नल मारे गुस्से के लाल-पीले हो उठे और उन्होंने सुरक्षा सैनिकों से कहा कि महाराजजी को यहाँ से हटाओ और ले जाकर कटघरे में बन्द कर दो। कुछ घण्टे बाद जब कर्नल मुख्य द्वार पर पुनः आए तो महाराजजी उसी प्रकार वहाँ सड़क के बीचोंबीच लेटे हुए मिले। कर्नल ने सुरक्षा सैनिकों को डाँट-फटकार की कि उन्होंने आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया। परन्तु सैनिकों ने कर्नल को विश्वास दिलाया कि आपकी आज्ञा का पालन अक्षरशः किया गया था। कटघरे के रजिस्टर की जब जाँच की गई तो उससे सिद्ध हुआ कि महाराजजी अभी कटघरे में बन्द हैं। उसके बाद वह कर्नल महाराजजी का भक्त बन गया।

❑ ❑ ❑

महाराजजी कानपुर में एक भक्त के परिवार में ठहरे हुए थे। उन्होंने बरामदे के कई चक्कर लगाए। फिर उन्होंने एक बड़े कमरे में झाँककर देखा। वह परिवार के मुखिया का दफ्तर था। तब उन्होंने कहा इस कमरे को खाली कर दिया जाए। आप कोई दूसरा कमला ले लीजिए। यह कमरा मेरे लिए छोड़ दीजिए। वे उस कमरे में तीन-चार महीने रहे। सुबह-शाम एक घण्टे के लिए उस कमरे से बाहर निकलते थे। और किसी को उस कमरे के अन्दर नहीं आने देते थे।

❑ ❑ ❑

1961 में अपने अनेक भक्तों के साथ महाराजजी ने चित्रकूट की यात्रा की। वहाँ नदी के किनारे खड़े होकर वे जोर-जोर से पुकारने लगे : ''गोपाल, गोपाल।'' यह गोपाल ग्वाला था। कोई व्यक्ति नहीं जानता था। लेकिन महाराजजी बराबर उसे बुलाते रहे। महाराजजी ने इसके सम्बन्ध में कहा कि मेरा मित्र था और मेरे लिए बहुत सी चीजें लाता था। जब उस व्यक्ति की खोज-बीन हुई तो पता चला कि चार पीढ़ी पहले कोई ऐसा व्यक्ति था जो ऐसे ही गुरु का भक्त था। बाद में गोपाल का पोता मिला भी। उसकी भी उस समय अवस्था काफी ढल चुकी थी।

महाराजजी ने एक बार कहा कि यहाँ एक फकीर रहते थे, जिसे घोड़ा बाबा कहते थे। मैं उनसे मिलने के लिए प्रायः आया करता था। ऐसा कहा जाता है कि कोई तीन सौ वर्ष पहले घोड़ा साई बाबा हुए थे।

❑ ❑ ❑

एक वृद्धा चिरकाल से महाराजजी के शरीर में कोई परिवर्तन न देखकर बहुत व्यग्र-सी थी। महाराजजी ने उसे बतलाया और कहा : "माँ, मैं मर गया था। मेरा पुनःजन्म पहाड़ पर हुआ है।" लखनऊ में अस्सी वर्ष का एक वृद्ध मुसलमान महाराजजी के दर्शन के लिए आया था। उसने बतलाया कि जब मैं दस-पन्द्रह वर्ष का किशोर था उस समय महाराजजी प्रौढ़ावस्था प्राप्त कर चुके थे। महाराजजी ने कहा इसकी बातों पर विश्वास मत करो। एक अन्य अस्सी वर्ष के बुड्ढे ने कहा कि मैं महाराजजी को पिछले सत्तर वर्षों से जानता हूँ। उस समय महाराजजी बीस वर्ष के युवा थे और उन्होंने मुझे पहली नौकरी शुरू करने से पहले आशीर्वाद दिया था।

❑ ❑ ❑

एक और सज्जन ने बतलाया कि मैंने पहली बार महाराजजी के दर्शन 1930 में किए थे। उस समय मैं स्कूल में पढ़ता था। महाराजजी हमारे घर पर फैजाबाद में आया करते थे। पिताजी के सेवानिवृत्त होने के बाद मैं जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट बना। आगरा, बरेली, कानपुर, लखनऊ आदि शहरों में जहाँ-जहाँ मेरा तबादला हुआ वहाँ-वहाँ महाराजजी पधारा करते थे। हमारे घर में सदा महाराजजी के लिए एक कमरा सुरक्षित रहता था। 1960 के बाद से मुझे महाराजजी में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं दिखाई दिया।

❑ ❑ ❑

1968 में एक वृद्धा महाराजजी के दर्शन करने के लिए आई। जब उसने महाराजजी को देखा तो उसे बड़ी हैरानी हुई। उसने कहा कि नीब करौरी बाबा अब कैसे जीवित हो सकते हैं? उनका शरीर छूटे मुद्दत हो गई होगी। मेरे पिता नीब करौरी बाबा के भक्त थे और वे कहते थे कि मैं चालीस वर्षों से बाबा को जानता हूँ। इस समय मेरी आयु 73 वर्ष की है। मैं जब सात वर्ष की थी तब मैंने बाबा के दर्शन किए थे और मुझे अब भी वैसे ही दिखाई दे रहे हैं जैसा कि मैंने उन्हें पहली बार देखा था। महाराजजी उस पर क्रुद्ध हुए और फिर भक्तों से उससे और बातें करने से मना कर दिया।

❑ ❑ ❑

एक बार महाराजजी कार से यात्रा कर रहे थे। रास्ते में ऐसी जगह पेट्रोल खत्म हो गया जहाँ उसे प्राप्त करना सम्भव न था। महाराजजी ने ड्राइवर से कहा टंकी में पानी डालो और आगे बढ़ो। फिर उन्होंने ड्राइवर को आदेश दिया कि जब तक मैं जीवित रहूँ तब तक यह बात किसी से मत कहना। महाराजजी ने कहा कि यदि तुमने इस सम्बन्ध में कुछ कहा तो तुम्हें कोढ़ हो जाएगा।

महाराजजी के शरीर छोड़ने के कोई तीन वर्ष बाद उस ड्राइवर ने उक्त किस्सा सुनाया।

❑ ❑ ❑

महाराजजी कार से कश्मीर जा रहे थे कि रास्ते में उसका क्लच स्लिप करने लगा। एक छोटे से गाँव में ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी क्योंकि पहाड़ी रास्ते पर उससे खतरा हो सकता था। नाममात्र का मिस्त्री अवश्य ढूँढ़े मिल गया। पर वह जैसे-जैसे क्लच को सही करता वैसे-वैसे और खराब होता जाता और अन्त में उसने बिल्कुल काम करना बन्द कर दिया। एक भक्त भी महाराजजी के साथ यात्रा कर रहे थे। उन्होंने महाराजजी से पूछा कि अब क्या किया जाए। महाराजजी ने कहा कि अब किसी ट्रक को रोको और कार को उसके पीछे बाँध दो। जितने भी ट्रक मिले वे सब कश्मीर से लौट रहे थे। जब महाराजजी से यह बात कही गई तो उन्होंने कहा कि अरे ये ब्राह्मण इतने कंजूस हैं कि इतना पैसा भी खर्च नहीं कर सकते कि ट्रक कार को घसीटकर ले जाए। उस भक्त के पास एक हजार रुपए थे। उसने एक बस वाले से बात की और वह कार को ले चलने के लिए तैयार भी हो गया। फिर उस भक्त ने एक रस्सा खरीदा, कार को उससे बाँधा और जैसे ही चलने को हुए तो सामने से एक और बस आ गई। उसके चालक ने कहा कि आगे चेक पोस्ट है इसलिए बस को कार खींचकर नहीं ले जानी चाहिए। अब अन्धेरा हो चला था। वहाँ रहने के लिए होटल भी नहीं था। अतः वह भक्त महाराजजी के पास गया और उसने निवेदन किया कि अब हमारे सामने तीन विकल्प हैं। पहला यह कि हम यहीं बिना कम्बलों के रात इसी कार में बिताएँ। दूसरा यह कि ट्रक से कार बाँधकर पीछे लौट चलें या फिर तीसरे आगे बढ़ें। उस भक्त का आशय यह था कि अब आपकी शक्ति के सहारे ही आगे बढ़ा जा सकता है क्योंकि क्लच खराब हो चुका है।

महाराजजी ने कहा चलो, चला जाए। कार चल पड़ी। श्रीनगर पहुँचने तक न गाड़ी रास्ते में कहीं खड़ी हुई न क्लच का ही उपयोग करना पड़ा और न ही रास्ते में पेट्रोल लेना पड़ा। सामान्य परिस्थितियों में ऐसा होना असम्भव ही था।

❑ ❑ ❑

एक बार महाराजजी ने एक भक्त से कहा कि यहाँ से जो गाड़ी जाती है उसमें दो सीटें प्रथम श्रेणी के वातानुकूलित डिब्बे में आरक्षित करा दें। सभी अधिकारियों ने उस भक्त को बतलाया कि कलकत्ता से कालिका तक सभी सीटें आरक्षित हैं। फिर भी उस भक्त ने दो टिकट खरीद लिए भले ही आरक्षण प्राप्त न हुआ था। उस भक्त के मन में विचार आया कि मैं खाली समय बरबाद कर रहा

हूँ और अन्ततः मुझे ये टिकट वापस करने पड़ेंगे। महाराजजी स्टेशन पर चले आए और प्लेटफॉर्म पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। फिर एक जगह रुक गए। इसके बाद जब गाड़ी आई तो प्रथम श्रेणी का वातानुकूलित डिब्बा ठीक महाराजजी के सामने खड़ा हुआ। इस भक्त को अचम्भा हुआ कि महाराजजी ने कैसा स्थान खड़े होने के लिए पहले से चुन लिया था। कन्डक्टर दरवाजे पर ही खड़ा था। भक्त ने उसे दो शायिकाओं के लिए कहा। कन्डक्टर ने कहा : "पागल हुए हो क्या? कलकत्ता से कालका तक एक भी बर्थ खाली नहीं है।" उस भक्त ने अपने को असहाय समझकर महाराजजी की ओर देखा। उन्होंने एक उँगली उठाई और धीरे से कहा : "अटैन्डेन्ट"। वह भक्त फिर अटैन्डेन्ट के पास गया और उससे दो बर्थों के लिए कहा। अटैन्डेन्ट ने कहा : "हाँ हाँ, जगह है। एक पार्टी ने कलकत्ता से कालका तक की सीटें आरक्षित कराई थीं परन्तु कुछ व्यापारिक कारणों से उसे मुगलसराय उतर जाना पड़ा। बस दो ही जगहें खाली हैं।" यह वही डिब्बा था जो महाराजजी के सामने खड़ा था।

❑ ❑ ❑

महाराजजी अपने एक भक्त के यहाँ कभी सुबह, कभी शाम और कभी रात को भी पहुँच जाया करते थे।

1940 की बात है। महाराजजी एक दिन रात के समय अपने उसी भक्त के यहाँ पहुँचे और जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने लगे। नींद से उठने के बाद जब गृहस्वामी ने दरवाजा खोला तो महाराजजी ने कहा : "बहुत से भक्त मेरे पीछे पड़े हुए हैं। मुझे कहीं शान्ति नहीं मिलती इसलिए मैं अपने लिए सिर छिपाने के लिए जगह खोज रहा हूँ।" उस व्यक्ति ने कहा कि मैं इस सम्बन्ध में आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ। जैसे ही वे आपको नहीं देखेंगे, वे सीधे यहाँ भी आ पहुँचेंगे।

"ठीक है, मैं आपकी चारपाई के नीचे छिप जाऊँगा। खिड़कियाँ और दरवाजे सभी बन्द कर दीजिएगा। एक चटाई और कम्बल मुझे दे दीजिए। अगर लोग ढूँढ़ते हुए आएँ तो उनसे कह दीजिएगा कि महाराजजी को हमने नहीं देखा।" उस व्यक्ति ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था। जब लोग आधी रात को उसके यहाँ आए तो उसने उन्हें नींद खराब करने के नाम पर खूब डाँटा-फटकारा और उलटे पाँव लौटा दिया। महाराजजी उस व्यक्ति की खाट के नीचे सोते रहे और खाट की चादर इस प्रकार नीचे तक खींच ली थी कि कोई देख न पाए। वह व्यक्ति भोर में चार बजे उठा। उसने देखा कि महाराजजी उस कमरे में कहीं नहीं हैं। फिर उसने दूसरे कमरे में भी उन्हें ढूँढ़ा। यद्यपि दरवाजे और खिड़कियाँ अब भी सब बन्द थीं तो भी महाराजजी वहाँ नहीं थे। बाद में उसे

पता चला कि महाराजजी उसी मकान में चले गए हैं जहाँ से वे आए थे। जब महाराजजी से पूछा गया कि जब आप गए होंगे तब खिड़कियाँ–दरवाजे तो सब बन्द थे तो महाराजजी ने इतना ही कहा : "आपको परेशान करना नहीं चाहता था।"

❑ ❑ ❑

एक सज्जन महाराजजी को अपने साथ नीब करौरी से वृन्दावन ले चलना चाहते थे परन्तु महाराजजी जाना नहीं चाहते थे। उन दिनों महाराजजी नीब करौरी में ही रह रहे थे। महाराजजी ने उनसे कहा कि मुझे कमरे में बन्द कर दीजिए। मुझे कुछ आवश्यक काम करना है। जब वे व्यक्ति वृन्दावन से लौट आए तो उन्होंने कहा कि वृन्दावन में महाराजजी का सान्निध्य प्राप्त करके बहुत ही आनन्द आया। परन्तु जब ताला खोला गया तो महाराजजी उसी कमरे में विराजमान थे।

❑ ❑ ❑

महाराजजी जागेश्वर जा रहे थे। उनके साथ एक भक्त भी था। जब वे अल्मोड़ा पहुँचे तो महाराजजी ने उस भक्त से कहा कि यहाँ समाधि लगाओ। उस समय उस भक्त को ऐसा लगा कि जैसे आकाश में उठा जा रहा होऊँ और कैलास पर्वत ठीक मेरे सामने हो। इसके बाद उसकी चेतना लुप्त हो गई। कुछ देर बाद जब उसे होश आया तब वह फिर आगे को चल पड़े। बाद में उस भक्त की पत्नी तथा अन्य लोगों ने भी कहा कि ठीक उस समय महाराज जी और उस भक्त को हमने दिल्ली में देखा था। उनको इस बात की हैरानी भी हुई कि ये लोग इतनी जल्दी दिल्ली से क्यों चले गए।

❑ ❑ ❑

एक दल वसुधारा (गोमुख) जा रहा था। एक माता कुछ अस्वस्थ थीं इसलिए उसे साथ ले चलना दल के लिए सम्भव नहीं था। जब दल के अन्य लोग चलने लगे तो वह माता अपने भाग्य को कोसने लगी। थोड़ी देर बाद महाराजजी उसके पास आए और उसे आश्वस्त करते बोले : "माँ, आप वसुधारा देखना चाहती हैं।" तब महाराजजी ने उसके हाथ को स्पर्श किया और कहा जरा आप बाहर बरसाती तक चली चलें। और वे जब बरसाती में आईं तो उन्हें सामने वसुधारा दिखाई पड़ी। वे हर्षातिरेक से विह्वल हो गईं। बाद में पता चला कि वह दल वसुधारा नहीं पहुँच पाया था क्योंकि पहाड़ गिरने से मार्ग अवरुद्ध हो गया था। जब दल के लोग लौटकर आए तो उस माता ने कहा मैं तो वसुधारा के दर्शन कर आई। उन लोगों को पहले तो विश्वास नहीं हुआ, फिर उन्होंने पूरी घटना सुनाई और वसुधारा का पूरा विवरण दिया तो लोग

आश्चर्यचकित हुए। वहाँ एक वृद्ध गाइड भी था जो कई बार वसुधारा हो आया था। उसने भी उस माता द्वारा बतलाए हुए विवरण की पुष्टि की।

❑ ❑ ❑

हनुमानगढ़ में एक बार घी चुक गया था। महाराजजी ने एक भक्त से कहा कि बाल्टी में थोड़ा पानी भर कर पीछे जंगल में रख आओ। थोड़ी देर बाद महाराजजी ने कहा कि मुझे पेशाब करने के लिए जाना है। फिर वे वहाँ से उठकर बाहर चले गए। जब लौटे तो जोर-जोर से चिल्ला रहे थे : ''आप लोग ध्यान ही नहीं रखते। चोर घी चुरा ले गए। वह देखो घी का टिन जंगल में पड़ा हुआ है।'' और वे लोग घी की बाल्टी वहाँ से ले आए।

❑ ❑ ❑

कुम्भ मेले के अवसर पर महाराजजी लोगों से कह रहे थे कि गंगाजल वस्तुतः जल नहीं, दूध है। फिर एक दिन महाराजजी के साथ कुछ भक्त गंगाजी में नाव में संगम की ओर जा रहे थे तो उनमें से किसी में महाराजजी के वचन की सत्यता परखने की इच्छा हुई। लेकिन उन्होंने महाराजजी से कुछ कहा नहीं। महाराजजी ने उससे कहा कि गंगा से एक लोटा जल भर लो और उसे कपड़े से ढँक दो। फिर जब महाराजजी ने अपने भक्तों के लिए उसे गिलास में डाला तो वह बहुत मीठा दूध निकला। क्योंकि बहुत से भक्त अभी तम्बू में भी थे, इसलिए एक भक्त के मन में विचार हुआ कि क्यों न थोड़ा-सा दूध उनके लिए भी ले चला जाए। परन्तु महाराजजी ने उस भक्त के हाथ से गिलास छीन लिया और उसे गंगाजी में फेंक दिया।

❑ ❑ ❑

महाराजजी का एक भक्त रेलवे में काम करता था। एक दिन वह अपने साथ एक जोड़े को पहली बार महाराजजी के पास लाया। महाराजजी ने अकेले में उस स्त्री से कहा : ''तुम एक गरीब दस वर्षीय बालक का पालन कर रही हो। यह तुम बहुत अच्छा कर रही हो।'' जब वह स्त्री कमरे से बाहर निकली तो वह बहुत ही आश्चर्यचकित थी कि उसके सिवाय यह बात कोई नहीं जानता था। यहाँ तक कि उसका पति भी नहीं जानता था कि मेरी पत्नी एक बच्चे का पालन कर रही है।

❑ ❑ ❑

एक सिपाही एक अपराधी को पकड़े हुए तथा उसे मारते-पीटते हुए किसी बाजार से ले जा रहा था। महाराजजी ने उससे कहा कि ऐसा मत करो।

उस सिपाही ने महाराजजी को खरी-खोटी सुनाई परन्तु महाराजजी ने उत्तर दिया तुम्हें उदारतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए। क्या मालूम की कभी तुम्हारी भी ऐसी स्थिति हो।

अगले ही दिन वह सिपाही रिश्वत लेने के जुर्म में गिरफ्तार हुआ और हथकड़ी पहने उसी बाजार में से ले जाया गया।

❑ ❑ ❑

एक फ्रांसीसी आनन्दमयी माँ के आश्रम में ठहरा हुआ था। वहाँ से किसी आश्रमवासी से उसने नीब करौरी बाबा के दर्शनों की बात चलाई। उस आश्रमवासी ने कहा कि यदि आप दस मिनट तक नीब करौरी बाबा का स्मरण करें तो बाबा यहीं उपस्थित हो जाएँगे। उस फ्रांसीसी ने तुरन्त अपनी आँखें बन्द कर लीं और 'नीब करौरी बाबा, नीब करौरी बाबा' की जय बोलने लगा। महाराजजी दस ही मिनट बाद अप्रत्याशित रूप से माँ आनन्दमयी के आश्रम में आ पहुँचे। वे उस फ्रांसीसी के समीप गए और उससे पूछा : "तुम मुझे क्यों स्मरण कर रहे हो। लो मैं आ गया हूँ क्या कहना चाहते हो।"

❑ ❑ ❑

महाराजजी किसी तरफ जा रहे थे कि रास्ते में उन्हें हस्तरेखा देखने वाला एक व्यक्ति दिखाई पड़ा। उसने महाराजजी के एक भक्त का हाथ देखकर कहा कि तुम तीन दिनों के अन्दर मर जाओगे। यह सुनकर वह भक्त अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठा। परन्तु भहाराजजी ने कहा : "यह व्यक्ति बहुत चलता पुर्जा है। परन्तु यह मूर्ख स्वयं नहीं जानता कि इसकी मृत्यु तीन दिनों के अन्दर होने वाली है।" और वह तीन दिन के अन्दर सचमुच मर गया।

❑ ❑ ❑

महाराजजी को उत्तरप्रदेश वन विभाग से एक एकड़ जमीन मन्दिर बनवाने के लिए ऋषिकेश में मिली थी। परन्तु महाराजजी के जीवन में यहाँ एक छोटा सा मन्दिर और कुटिया ही बन पाई थी। उनके शरीर छोड़ने के 11 वर्षों बाद सिद्धि माता के आदेश पर बाबा के परम भक्त जल निगम के तत्कालीन मुख्य इंजीनियर श्री परीक्षित कुमार चोपड़ा उस भूमि की खोज में देहरादून से अपनी कार द्वारा पत्नी तथा दो पुत्रियों के साथ निकले। माँ ने उन्हें बतलाया था कि जमीन के पास ही डॉक्टर की दुकान है। चोपड़ा साहब ऋषिकेश पहुँचे। इसी समय किसी राह चलते के कान में चोपड़ाजी की बात पड़ी तो वह उनसे कहने लगा कि चलिए मैं आपको वह जमीन दिखलाता हूँ। वह देखने में गँवार-सा व्यक्ति था। कम्बल ओढ़े हुए था और बीड़ी पी रहा था। चोपड़ाजी ने उसे अपनी कार में बैठाया और जिस तरफ उसने इशारा किया था वहाँ कुछ ही क्षणों में कार पहुँची। उस व्यक्ति ने कार में बैठे-बैठे बताया कि यह जमीन बाबाजी ने ली थी। एक स्थानीय व्यक्ति ने उस जमीन पर कब्जा कर रखा था और उसका उपयोग खेती-बाड़ी हेतु निजी रूप से कर रहा था। जैसे ही कार भूमि के गेट पर पहुँची

तो चोपड़ाजी, उनकी पत्नी तथा दोनों पुत्रियाँ कार से उतरे। क्या देखते हैं कि जो व्यक्ति ड्राइवर के पास बैठा था, कहीं नहीं है। वह आदमी कब उतरा और कहाँ चला गया जबकि वहाँ खुली जगह थी तथा सुनसान सड़क भी थी। चोपड़ाजी को वह आदमी चारो तरफ देखने पर भी दिखाई नहीं दिया। चोपड़ा परिवार अवाक् रह गया। उन लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ कि महाराजजी स्वयं मार्ग-निर्देश करने आए थे और हम उन्हें पहचान भी न पाए। फिर बड़ी मुश्किल से उस जमीन पर कब्जा प्राप्त किया गया और 10 जुलाई 1984 को हनुमानजी के मन्दिर का पुनरुद्धार हुआ।

❑ ❑ ❑

जिस कम्पाउन्डर ने उस जमीन पर कब्जा कर रखा था और निजी कार्य हेतु भूमि का प्रयोग कर रहा था उसने कब्जा छोड़ने के लिए 20,000 रुपए की माँग की। तब चोपड़ा जी ने स्वयं 1100 रुपये देने की बात की। वहाँ उपस्थित महाराजजी के परम भक्त जी०पी० घिलडियाल, ए०डी०एम० मुजफ्फरनगर, श्री शंकरदत्त जोशी, चीफ एक्जिक्यूटिव ऑफिसर, बदरीनाथ मन्दिर तथा ऋषिकेश के प्रतिष्ठित व्यापारी सुभाष अरोड़ा ने भी ग्यारह-ग्यारह सौ देने की बात कही। इस प्रकार 4,400 रुपये इकट्ठे हो गए। वहाँ उपस्थित एक व्यक्ति ने कहा कि शेष 15,000 रुपये मैं देता हूँ। उसने चेक भी काट दिया। दिनांक 08-07-84 को यह लिखा-पढ़ी हुई कि 20,000 रुपये उसे इतने दिन चौकीदारी के लिए दिए जा रहे हैं। दिनांक 10-07-84 को अर्थात् तीसरे दिन वहाँ हनुमानजी की बड़ी मूर्ति स्थापित करने का निश्चय हुआ। संयोग समझिए कि कम्पाउन्डर चेक भुनाने बैंक में गया तो चेक बैंक ने लौटा दिया क्योंकि खाते में धन नहीं था। चेक देने वाले व्यक्ति संयोगवश उस समय मन्दिर प्रांगण में उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि रुपया खाते में एक-दो दिन में आ जाएगा। परन्तु वह चेक भुना नहीं। बाद में उस कम्पाउन्डर को नकद भुगतान 15,000 रुपये अवश्य कर दिया गया। लगता था कि चेक की बात तात्कालिक व्यवस्था के लिए दैवयोग से बाबाजी द्वारा ही कराई गई थी।

❑ ❑ ❑

बरेली की बात है। महाराजजी ने अपने एक भक्त को सुबह छह बजे रेलवे स्टेशन पर मिलने के लिए कहा। उन दिनों बरेली में भयानक बाढ़ आई थी। इसलिए उस भक्त के मन में यह बात आई कि शायद महाराज न आएँ। परन्तु फिर भी उन्होंने स्टेशन पर जाने का निश्चय किया। महाराजजी आए और उन्होंने आते ही कहा कि तुम सोच रहे थे कि बाढ़ के कारण मैं यहाँ नहीं पहुँच पाऊँगा।

❑ ❑ ❑

एक विदेशी महिला जब महाराजजी के दर्शन करके अपने देश लौटी तो उसकी माता ने उससे महाराजजी के सम्बन्ध में अपने अनुभव बतलाने के लिए कहा।

वह कहने लगी मैं अनुभव करती हूँ कि अब मेरी भी कुछ 'हैसियत' है। मैं वस्तुतः इस शब्द से नफरत करती हूँ परन्तु लगता है कि यह मुझ पर अब लागू होता है। मैं माता थी और माता के नाते महाराजजी ने मुझे विशेष सम्मान दिया। मुझे ऐसा सम्मान आज तक किसी से नहीं मिला और अमेरिका में तो खास तौर पर नहीं मिला। मुझे तो सचमुच अविस्मरणीय अनुभव हुआ।

□ □ □

महाराजजी बिहारीजी के मन्दिर में गए और पीछे के द्वार से बाहर निकले। उसी समय गली में कोई चिल्ला रहा था—एक रोटी दे दो। महाराजजी ने उसे अपनी ओर बुलाया। वह साधु था जो प्रतिदिन भिक्षा में दो ही रोटी ग्रहण कर अपना निर्वाह करता था। महाराजजी ने उससे पूछा कि तुम्हारी रोटी कहाँ है? महाराजजी ने उससे रोटी ली और खा भी ली। महाराजजी ने कहा कि वह व्यक्ति इराकी था और चालीस वर्ष पहले वृन्दावन में आया था। परन्तु वहाँ जो भक्त उपस्थित खड़े थे उन्हें वह साधु इस संसार का नहीं दिखाई पड़ रहा था।

□ □ □

कैंची की बात है। आधी रात को महाराजजी उठे और उन्होंने भक्तों को भी जगाया। उस समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी। महाराजजी ने कहा कि यहाँ से आधा किलोमीटर दूर ऊपर की तरफ एक जीप खराब हो गई है इसलिए उसमें बैठे यात्रियों के लिए चाय बनाकर जल्दी से ले जाओ। चाय बनाई गई और भक्त दौड़ते हुए वहाँ जा पहुँचे। चार स्त्रियाँ और एक पुरुष था। उन्हें चाय पिलाई गई। महाराजजी ने कुछ भक्तों को पीछे यह कहते हुए और चाय लेकर भेजा कि वह चाय तो ठण्डी हो गई होगी। जब उन लोगों को मन्दिर में लाया गया तो महाराजजी ने कहा कि इन महिला भक्तों के यहाँ मैं आज से तीस बरस पहले जाया करता था। ये लोग बहुत अच्छे हैं। उन्होंने मुझे कम्बल भी दिया था। महाराजजी ने उन्हें कम्बल दिए। वे महिलाएँ भी महाराजजी को पहले से जानती थीं।

□ □ □

1969 में रिचर्ड ने अमेरिका से एक व्यक्ति को पत्र लिखा और पूछा कि क्या मैं महाराजजी को कुछ रुपया भेज दूँ। उत्तर में उसे जो महाराजजी का सन्देश मिला वह इस प्रकार था। "हमें रुपया नहीं चाहिए। भारत सोने की चिड़िया है। हम लोगों ने देना सीखा है, लेना नहीं। हम लोग ईश्वर को तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक हमारी कंचन-कामिनी इन दोनों में आसक्ति है। एक म्यान में

दो तलवारें नहीं रह सकतीं। हम जितना ही अधिक त्याग करेंगे उतना ही अधिक प्राप्त करेंगे।''

❑ ❑ ❑

एक बार महाराजजी ने एक भक्त को साँप काटने से बचाया था। वह भक्त उन दिनों हलद्वानी में एक छोटे से कमरे में रहता था। एक दिन वह उसी कमरे में किसी से बात कर रहा था कि एकाएक आधा वाक्य कह कर ही रुक गया। जब उसने घूमकर देखा तो एक नाग कमरे में प्रविष्ट हुआ और कमरे में पड़े बोरे के नीचे जा बैठा। उस भक्त के मन में आया कि महाराजजी न जाने ऐसा क्यों कर रहे हैं। वह साँप भी देखने में जहरीला था। भक्त ने बड़ी सावधानी से उस साँप को कनस्तर में डाला और उसे बाहर ले जाकर छोड़ आया। कोई दो वर्षों बाद उस भक्त ने महाराजजी से कहा कि आप मेरी सहायता या एक प्रकार से रक्षा नहीं कर रहे। मुझे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ रहा है।

इस पर महाराजजी ने कहा : ''क्यों एक बार मैंने तुम्हारी जान नहीं बचाई थी। साँप से रक्षा की थी।'' वह भक्त यह बात अच्छी तरह जानता था कि महाराजजी ने उस दिन मेरी रक्षा साँप से की थी। वह यह भी समझता था कि ऐसी घटनाओं को आकस्मिक कहकर टाला नहीं जा सकता।

❑ ❑ ❑

एक दिन महाराजजी ने ड्राइवर से भीमताल चलने को कहा। यह स्थान बदरीनाथ के रास्ते में है। भीमताल पहुँचने पर महाराजजी अपने एक भक्त के निवास पर गए। वहाँ पर जो भक्त इकट्ठे हुए थे उनसे महाराजजी ने कहा कि शिव मन्दिर के पास एक सुनसान कोठरी है। वहाँ जो भी हो उसे ले आओ। कुछ भक्त वहाँ गए। दरवाजा बन्द था। काफी देर तक वे दरवाजा खटखटाते रहे। दरवाजा नहीं खुला। वे वापस लौट आए। महाराजजी वहाँ से उठकर दूसरे भक्त के यहाँ गए। और उन्हें भी शिव-मन्दिर भेजा और कहा कि वहाँ से खाली हाथ न आएँ। तब वे लोग वहाँ गए। घण्टों पुकारने-चिल्लाने तथा दरवाजा खटखटाने के बाद खिड़की से एक वृद्ध झाँका और उसने इन लोगों को वापस चले जाने को कहा। जब ये लोग नहीं माने तब उसने दरवाजा खोला। वे पति और पत्नी दो थे। उन्हें महाराजजी के पास लाया गया। महाराजजी ने उन्हें देखते ही कहा कि क्या आप लोग भूखों मर कर ईश्वर को धमकी देना चाहते हैं? वह अपने भक्तों को इतनी सरलता से मरने नहीं देता। फिर उन्हें महाराजजी ने पूरी-तरकारी प्रसाद रूप में दी। महाराजजी के पुनः आग्रह करने पर उन्होंने प्रसाद पाया।

यह दम्पति मद्रास से बदरीनाथ आया था। सब कुछ चोरी चले जाने पर उन लोगों ने भीख माँगने से प्राण त्याग करना ही श्रेष्ठ समझा था। इस उद्देश्य से वे कई दिन से इस कोठरी में भूखे-प्यासे बैठे थे।

फिर महाराजजी ने उन्हें यह कहकर कुछ धन दिया कि घर पहुँचकर लौटा दीजिएगा। इस प्रकार वे दोनों आपने घर चले गए।

❑ ❑ ❑

एक दिन महाराजजी भक्तों के बीच में बैठे हुए थे कि एकाएक चिल्लाने लगे कि मुझे भूख लगी है, मुझे माँ खिलाएगी। फिर वे वहाँ से उठ खड़े हुए और माँ आनन्दमयी के आश्रम की ओर चल पड़े। रास्ते भर यही माला जपते रहे कि माँ खिलाएगी, माँ खिलाएगी। जब आश्रम पहुँचे तो सीधे माँ के कमरे में प्रविष्ट हो गए और एक तार रट लगाए रहे : माँ मुझे भूख लगी है। इस पर माँ खिल-खिलाकर हँस पड़ीं। तत्काल उन्होंने महाराजजी के लिए तगड़ा भोजन मँगवाया। फिर दोनों ने मिलकर वह भोजन भक्तों में बाँट दिया।

❑ ❑ ❑

आगरा से एक अधिकारी महाराजजी के दर्शनों के लिए कैंची आया था। उसे कैंची से ही कलकत्ता जाना था। महाराजजी ने उससे कहा कि आज मत जाओ। उस अधिकारी को उसी दिन कलकत्ता जाना जरूरी था। तो भी महाराजजी ने हठ किया कि आज मत जाओ। वह अधिकारी कुछ भुनभुनाया तो पर उसने यात्रा अवश्य स्थगित कर दी।

दूसरे दिन समाचार-पत्रों में भयानक ट्रेन दुर्घटना का विवरण छपा। दुर्घटना-ग्रस्त गाड़ी वही थी जिस पर वह अधिकारी सवार होने को था।

❑ ❑ ❑

एक दिन एक दरोगा महाराजजी के दर्शनों के लिए आया। उससे महाराजजी ने कहा तुम बेकार दरोगा हो। हमारे भूमियाधार आश्रम में एक व्यक्ति ने बिना लाइसेंस की पिस्तौल रखी है। तुम उसे पकड़ते क्यों नहीं?

पिस्तौलधारी व्यक्ति महाराजजी का परम भक्त था और अपना घर-द्वार छोड़कर उनकी सेवा में लगा था। महाराजजी ने ही उसे भूमियाधार आश्रम का सेवाकार्य सौंप रखा था। वह भक्त प्रतिदिन भूमियाधार से कैंची महाराजजी के दर्शन करने जाया करता था।

दरोगा भूमियाधार पहुँचा। महाराजजी का वह भक्त एक झोला लिये आश्रम से निकल रहा था। दरोगा ने उसकी तलाशी ली। उस झोले में एक खाली डिब्बा था और कुछ फूल-मालाएँ। मिठाई का डिब्बा दरोगा ने बिना खोले ही झोले में रख दिया। आश्रम में रखे उसके सामान की भी तलाशी ली पर पिस्तौल नहीं मिली। वह भक्त जब कैंची महाराजजी के आश्रम में पहुँचा तो महाराजजी ने कहा : "आज तुझे बचा दिया है, पिस्तौल थाने में जमा कर आ, नहीं तो कठिनाई में पड़ जाएगा।"

फिर उसी दिन उसने पिस्तौल थाने में जमा कर दी। वह भक्त पिस्तौल सदा अपने पास रखता था। उस दिन भी मिठाई के डिब्बे में उसने पिस्तौल रखी हुई थी।

❑ ❑ ❑

उत्तर प्रदेश कोऑपरेटिव सोसाइटीज़ के रजिस्ट्रार श्री इफ्तिखार हुसैन भी महाराजजी के दर्शनों के लिए समय-समय पर आया करते थे। श्रद्धा तो उनकी बाबा पर अधिक थी फिर भी उनके मन में बाबा की शक्ति की परीक्षा का विचार बना ही रहा। वे जब भी महाराजजी के दर्शन करने जाते थे तो उन्हें प्रसाद के रूप में पूरी-तरकारी मिलती थी। एक बार जब वे महाराजजी के दर्शन करने जा रहे थे तो उनके मन में आया कि "बाबा अन्तर्यामी हैं। मेरे मन में आज हलुआ खाने की इच्छा है। बाबा यदि हलुआ आज प्रसाद के रूप में दें तो मान लेंगे कि वे सचमुच पहुँचे हुए फकीर हैं।" फिर वे आश्रम पहुँचे। महाराजजी को प्रणाम किया। तब महाराजजी ने आदेश दिया कि इन्हें हलुआ खिलाया जाए। सच तो यह है कि महाराजजी उनके मन की पहले ही जान गए थे और उनके आने से पहले ही हलुआ बनाने का आदेश दे चुके थे।

❑ ❑ ❑

महाराजजी लखनऊ में अपने एक भक्त के यहाँ ठहरे थे और वहाँ भक्तों का जमघट लगा था। घर का सेवक भी एक रुपया टेंट में रखकर उनके दर्शनों के लिए वहाँ पहुँचा। जब उसने प्रणाम किया तो महाराजजी ने कहा : "अपनी कमर में खोसकर मेरे लिए रुपया लाया है।" उसने हामी भरी। महाराजजी ने कहा : "तो मुझे देता क्यों नहीं।" उसने रुपया निकालकर दिया और महाराजजी ने उसे अत्यन्त प्रेमपूर्वक ग्रहण किया और बाद में अपने भक्तों से कहा इसका एक रुपया आपके बीस हजार से अधिक मूल्यवान है।

❑ ❑ ❑

एक अँधेरी रात में एक भक्त महाराजजी के साथ जंगल में थे। उसने कहा कि महाराजजी मुझे ईश्वर दिखलाएँ।

महाराजजी ने उससे कहा जरा मेरा पेट मलो। वह भक्त पेट मलने लगा। उसे प्रतीत होने लगा कि पेट बराबर बढ़ता ही जा रहा है। अन्त में उसे पहाड़-सा प्रतीत होने लगा। महाराजजी खर्राटे भी भरने लगे। उनके खर्राटे का शब्द सिंहनाद के समान था। उस भक्त का कहना है कि यह क्रीड़ा मात्र थी परन्तु यदि उनकी कोई परीक्षा लेना चाहे तो वे ऐसा कुछ नहीं दिखाते।

❑ ❑ ❑

जेल का एक बूढ़ा कर्मचारी अत्यधिक बीमार पड़ गया। डॉक्टर ने कहा कि यह अधिक से अधिक 24 घण्टे ही जीवित रह सकता है। परन्तु उस बूढ़े कर्मचारी को याद है कि महाराजजी ने उस पर कृपा की और उसे मरने नहीं दिया। तीसरे दिन महाराजजी उस नगर में आए और एक भक्त के यहाँ पधारे। उन्होंने कहा कि यहाँ आस-पास एक बूढ़ा व्यक्ति रहता है। वह मेरे बारे में बहुत सोचता रहता है। आज-कल वह बीमार है। उसे देखने चलना है।

जब महाराजजी उस बीमार के घर गए तो क्या देखते हैं कि उसकी हालत बहुत बिगड़ी हुई है। महाराजजी ने अपना चरण उस बीमार के सिर के पास रखा। उस रोगी ने महाराजजी को प्रणाम किया और तत्काल अपना शरीर त्याग दिया।

बाद में महाराजजी ने अपने एक भक्त से कहा वह मुझे बहुत याद करता था। बस दर्शन दिए नहीं कि वह चल बसा।

अन्तिम लीला

महाराजजी के निधन के उपरान्त उनके शरीर को आश्रम के बरामदे में बर्फ की सिल्लियों पर रखा गया था। शाम को कार के ऊपर उनका शरीर रख कर वृन्दावन की गलियों में घुमाया गया। हजारों लोगों ने बैण्ड-बाजे और बत्तियों से सुसज्जित उस जुलूस को देखा। रात में 9 बजे मन्दिर के आँगन में बनी चिता पर महाराजजी का शरीर रख दिया गया।

12 दिसम्बर, 1973 को वृन्दावन के एक स्थानीय समाचार-पत्र में जो समाचार छपा था वह इस प्रकार था :

''प्रसिद्ध चमत्कारी नीब करौरी के सन्त का पार्थिव शरीर हनुमान मन्दिर के सामने वाले उनके प्रवास के प्रांगण में वैदिक रीति से अग्नि को समर्पित किया गया।

''आगरा से नैनीताल जाते हुए वे एकाएक बीमार पड़ गए और कुछ देर बाद उनका हार्टफेल हो गया।

''अग्निदाह से पहले उनकी शवयात्रा जुलूस के रूप में निकली। सजी हुई गाड़ी में उनके शरीर को रखा गया था। चिता कहाँ सजाई जाए, इसका निश्चय पागल बाबा श्री लीलानन्द ठाकुर ने किया। उन्होंने यह भी कहा कि वृन्दावन से अच्छा कोई और स्थान हो भी नहीं सकता। कैंची से सिद्धि माँ आईं और उन्होंने कहा कि अग्नि-संस्कार या तो कैंची में हो या फिर हरिद्वार में। चिता सुबह तीन बजे तक जलती रही। तब तक काफी संख्या में उनके भक्त अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि देने के लिए वहाँ पहुँच चुके थे। भक्त लोग बराबर आते ही जा रहे थे। आश्रम शोकमय था।

अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ० शंकरदयाल शर्मा सुबह छः बजे वहाँ पहुँचे थे और काफी देर तक चिता-भूमि के पास बैठे रहे। वे 1957 से महाराजजी के श्रद्धालु रहे हैं। उन्होंने आश्रमवासियों से महाराजजी के जीवन तथा क्रियाकलापों-सम्बन्धी विवरणों को एकत्र करने के लिए कहा। एक समिति भी गठित की गई। 22 सितम्बर को भण्डारे का आयोजन किया गया। राख को यमुना में नहीं छोड़ा गया। उसे उनके समाधि-स्थल में गाड़ने तथा उसका कुछ अंश तीर्थस्थानों में प्रवाहित करने का निश्चय किया गया।

वृन्दावन के निवासी महाराजजी के सदा विरुद्ध रहे। उन्हें वे चमत्कारी बाबा कह कर पुकारते थे।

जब उनके अमेरिकी भक्तों को उनकी मृत्यु का समाचार मिला तो बहुत ट्रंककाल आए।

बड़े-बड़े अधिकारी भी वृन्दावन में महाराजजी को श्रद्धांजलि देने के लिए पहुँचे थे।

रिचर्ड (रामदास) तथा अन्य विदेशी भक्त जब तक अमेरिका, यूरोप आदि से वहाँ पहुँचते, सैकड़ों भारतीय भक्त वहाँ पहुँच चुके थे। प्रेम और उदारता विस्मय-कारी थी। पहाड़ी और मैदानी तथा पूर्व और पश्चिम के लोगों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रह गया था। पारस्परिक ईर्ष्या तथा वैमनस्य के भाव भी तिरोहित हो चुके थे। सभी व्यक्ति अपनी क्षति की अनुभूति कर रहे थे। और सबको ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमें इस धरती पर ईश्वर के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

भारतीयों की ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के ग्यारह दिनों के बाद आत्मा सब सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाती है। ग्यारहवें दिन भण्डारे का आयोजन किया गया।

पूरे आँगन में शामियाने लगाए गए। एक ओर ऊँचा चबूतरा बनाया गया। चबूतरे में एक हवनकुण्ड बनाया गया। जैसे ही हवनकुण्ड को अग्नि दिखाई गई, स्वच्छ नीले आकाश में पूरब की ओर से काली घटा उठ खड़ी हुई। हवा इतनी तेज चलने लगी थी कि शामियाने फड़फड़ाने लगे। उस समय रिचर्ड के मन में विचार उत्पन्न हुआ ''महाराजजी, यदि यह आपका संकेत है तो यह यथेष्ट नहीं।'' रिचर्ड सोच रहे थे कि महाराजजी यदि आ ही रहे हैं तो इस रूप में आएँ कि उनके पूर्ण दर्शन हों।

बादल तेजी से आगे बढ़ रहे थे और हवा भी अधिक तेज होती चली जा रही थी। फिर उसने अन्धड़-तूफान का रूप धारण कर लिया। तम्बू तार-तार होने लगे, लकड़ी की बल्लियाँ भी टूट-टूटकर गिरने लगीं और हवनकुण्ड की अग्नि की लपटें बहुँत ऊँची उठने लगीं। वातावरण ने ऐसा भयानक रूप ले लिया कि लोग कभी उठते, कभी गिरते तो कभी एक-दूसरे को गले लगाते थे और कभी रोते थे। बहुत जल्दी ही उस घटना को महाराजजी का आशीर्वाद समझा जाने लगा। जैसे ही तूफान शान्त हुआ और स्थिति कुछ सम्भली तो भावविह्वल रिचर्ड वहाँ से दौड़े हुए पिछवाड़े के एक कमरे में जा घुसे। वे वहाँ क्यों गए थे, इसका उनके पास कोई जवाब नहीं था। उस कमरे में श्रीमती माली स्काट सोई हुई थीं। वे कुछ देर पहले अमेरिका से आई थीं। उन्हें महाराजजी के दर्शन का कभी सौभाग्य नहीं मिला था। रिचर्ड के फूटकर रो उठने के फलस्वरूप श्रीमती स्काट की नींद खुल गई। बाद में श्रीमती स्काट ने रिचर्ड को बताया कि जब मेरी नींद खुली थी तब उस समय मेरे ह्रदय में सुरताल से एक गीत बज रहा था। उस गीत का भावार्थ इस प्रकार का है :

> मृत्यु कोई चीज नहीं,
> मुझे लगता है कि मैं, तुममें खोई हूँ,
> और तुम मुझमें,
> मैं तुमसे कभी अलग नहीं होऊँगी

मेरे मन में, मेरे मस्तिष्क में
फूलों में, बच्चों में, वर्षा में
तुम्हारा नया जन्म हो रहा है।

यह गीत उस तूफान की देन थी। रिचर्ड का कथन था कि महाराजजी मृत्यु के बारे में प्रायः जो कुछ कहा करते थे वही सब-कुछ गीत के रूप में परिणत हुआ था। जब तक समय नहीं आता तब तक कोई मरता नहीं। ईश्वर के प्यार को छोड़कर हर चीज अप्रासंगिक है।

महाराजजी कहा करते थे कि शरीर को जला दिया जाना चाहिए। ऐसा करने से आत्मा की फिर से शरीर धारण करने की लालसा क्षीण हो जाती है।

रिचर्ड (रामदास) का कथन है कि महाराजजी हमें एक तरफ से जड़ीभूत कर रहे ते। वे उसी दिन शाम को 6 बजे वृन्दावन पहुँचे थे जब लोग महाराजजी की अरथी लेकर वापस लौट रहे थे। महाराजजी का शरीर कार की छत पर रखा हुआ था। फिर उसे उतार कर चौतरे पर सबके दर्शनों के लिए रखा गया। सभी लोगों ने महाराजजी के चरणों को स्पर्श किया। रिचर्ड ने प्रणाम किया था। रिचर्ड का मत था कि उस समय ऐसा अनुभव हो रहा था कि कुछ लुप्त हो गया परन्तु वस्तुतः कुछ भी बदला नहीं था। उनका मुख-मण्डल वैसे ही चमक रहा था।

रिचर्ड को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि महाराजजी ही जड़ीभूत कर रहे हैं। हम सभी दुःखी थे तथा दुःख से किसी को वास्तविकता का बोध नहीं हो रहा था। परन्तु यह तथ्य शीघ्र ही सामने आया कि महाराजजी अब भी हमारे साथ हैं भले ही उनका शरीर हमसे दूर चला गया है। एक बात जो विशेष उल्लेखनीय है वह यह कि उस समय तो यह भी विश्वास नहीं हो रहा था कि महाराजजी अब हम लोगों के बीच नहीं हैं।

एक भक्त रातभर महाराजजी की चिता के पास ही बैठा रहा और जोर-जोर से श्रीराम, जयराम, करता रहा। उसने कहा कि मैंने महाराजजी को चिता के ऊपर बैठे देखा था और उनके एक ओर भगवान् राम और दूसरी ओर भगवान् शिव विराजमान थे। वे सिर पर खीर उड़ेल रहे थे जिससे अच्छी तरह जल जाएँ। ऊपर से देवता उन पर फूल भी बरसा रहे थे। सभी प्रसन्न थे।

राजस्थान का एक भक्त महाराजजी के दर्शनों के लिए कैंची आया। जब उसे बतलाया गया कि महाराजजी चोला छोड़ चुके हैं तो उसे विश्वास न हुआ। उसने कहा अभी तीन महीने पहले मेरी कन्या का विवाह हुआ था। उसमें महाराजजी स्वयं पधारे थे तथा उन्होंने ही विवाह का सारा प्रबन्ध भी किया था।

महाराजजी द्वारा महासमाधि ले लेने के उपरान्त एक महिला भक्त आश्रम में ठहरी हुई थीं। वे सुबह तीन बजे उठीं। वे जैसे ही महाराजजी की समाधि के

पास पहुँचीं तो क्या देखती हैं कि वहाँ महाराजजी स्वयं खड़े हैं। उनका विशाल रूप था। वे आनन्द-विभोर हो उठीं और दौड़ी-दौड़ी कमरे की ओर कुमकुम लाने के लिए बढ़ीं जिससे महाराजजी को तिलक कर सके।

महाराजजी की महासमाधि के उपरान्त इलाहाबाद की एक महिला भक्त के मन में उनके दर्शनों की कामना जाग्रत् हुई। वे उन दिनों अपने पति के साथ हरिद्वार में थीं तथा शय्याग्रस्त थीं। वे एकाएक उठकर अपनी चारपाई पर बैठ गईं और ऊलजलूल बकने लगी "कि महाराजजी आ गए हैं, वे वहाँ हैं", वे महिला अत्यधिक भयभीत-सी थीं, फिर कहने लगीं कि "महाराजजी मुझ पर हँसे और पूछने लगे कि तुम इतनी भयभीत क्यों हो। क्या तुम पाँव छूना चाहती हो और पहले की तरह मेरे शरीर की मालिश करना चाहती हो।"

1976 में एक भक्त आश्रम में आए। वे महाराजजी के कमरे में जाना चाहते थे परन्तु वहाँ के रक्षकों ने उन्हें अन्दर नहीं जाने दिया। वे इधर-उधर ताली ढूँढ़ने लगे कि इतने में उन्हें महाराजजी की वाणी सुनाई पड़ी : यह सब क्यों हो रहा है। यह तरीका नहीं है, ताली यह है। ये द्वार खोलेंगे।

महाराजजी द्वारा महासमाधि लेने के एक वर्ष बाद की बात है। श्रीमती इन्दिरा अपनी माता की पुण्यतिथि के लिए आश्रम में आई हुई थीं। वे सुबह से शाम तक वहाँ रुकी रहीं तथा उन्होंने महाराजजी के अनेक किस्से भी सुनाए। उन्होंने बताया कि जब मैं बीमार थी तो महाराजजी ने मुझे एक फूल दिया था और जब मैं अच्छी हुई तो फूल एकाएक अन्तर्धान हो गया। उन्होंने यह भी बताया कि मेरे बच्चों का नामकरण महाराजजी ने कैसे-कैसे किया। प्रातःकाल बातचीत के सिलसिले में उन्होंने यह प्रश्न किया था : "महाराजजी का विशाल रूप देख लेने के बाद भी क्या कोई जीवित रह सकता है?" सायंकाल वे अन्य माताओं के साथ महाराजजी के कमरे में बैठी हुई थीं कि सहसा वे महाराजजी के तख्त की ओर उन्मुख होकर उन्हें प्रणाम करने के उद्देश्य से दण्डवत् लेट गईं और उन्होंने तत्क्षण वहीं प्राण त्याग दिए। उनकी उँगलियाँ उस समय माला फेरने की-सी मुद्रा में थीं।

महाराजजी के निधन के उपरान्त एक परिवार कार से कैंची आश्रम के आगे से निकल रहा था कि सहसा कार बिगड़ गई। रात को आश्रम में ठहरने के लिए उन्होंने अनुमति चाही। इसी समय आश्रम में चर्चा हो रही थी कि समाधि बनाने के लिए रुपया कहाँ से आए। सारी रात वह व्यक्ति इस बात के लिए छटपटाता रहा कि मुझे इस मन्दिर के लिए कुछ करना चाहिए। दिन चढ़ने पर उसने भूमि के लिए आवश्यक धनराशि आश्रम को दे दी।

मन्दिरों तथा आश्रमों की स्थापना

महाराजजी हनुमानजी के अनन्य भक्त थे इसलिए उन्होंने विशेष रूप से हनुमान मन्दिरों के निर्माण अनेक स्थानों पर करवाए। वैसे अनेक स्थलों पर हनुमानजी के विग्रह के साथ-साथ शिवलिंग, विष्णु, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, वैष्णवी देवी आदि के विग्रह भी उन्होंने स्थापित कराए।

1. सर्वप्रथम महाराजजी ने गुजरात में बाबानियाँ के वासकाल में तालाब के किनारे हनुमानजी की मूर्ति स्थापित की थी। अब वहाँ मन्दिर बन चुका है।
2. नीब करौरी गाँव में महाराजजी ने हनुमानजी का मन्दिर बनवाया था। मन्दिर के पास ही एक कुआँ भी बनवाया था।
3. उत्तर प्रदेश के कुमाँऊ तथा गढ़वाल मण्डलों में अनेक स्थानों पर जैसे हनुमानगढ़ी भूमियाधार, कैंची, पौड़ी, गेठिया, काठगोदाम, हलद्वानी, काकड़ी घाट, पिथौरागढ़ आदि में हनुमान मन्दिर बनवाए। कैंची और भूमियाधार के मन्दिर अत्यन्त भव्य हैं। उक्त सभी मन्दिर 1962 के बाद बने हैं।
4. 1964 में कानपुर पनकी में हनुमान मन्दिर बना।
5. शिमला में संकटमोचन मन्दिर 1966 में बना।
6. 1967 में लखनऊ में श्री हनुमान मन्दिर बनवाया।
7. 1968 में वृन्दावन में हनुमानजी की संगमरमर की विशाल मूर्ति स्थापित कराई गई। यहाँ दुमंजिली विशाल धर्मशाला भी बनवाई। इसी आश्रम में महाराजजी की चिता जली थी। यहीं 1981 को उनकी मूर्ति भी स्थापित की गई है।
8. दिल्ली में महरौली के निकट जौनापुर गाँव में 1971 में हनुमान मन्दिर की स्थापना हुई। 1983 में यहाँ देवी का विग्रह भी स्थापित किया गया। यह आश्रम 30 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। यहाँ बहुत बड़ी गोशाला भी है।

महाराजजी के चोला छोड़ने के बाद भी हनुमान मन्दिर के निर्माण का कार्य उनके भक्तों ने जारी रखा। इनमें से प्रमुख हैं—

1. नेपाल की सीमा पर धारचुला में 1978 को हनुमानजी का मन्दिर बना। इस मन्दिर के बनने के बाद वहाँ कुछ देर विश्राम करके यात्री मानसरोवर जाते हैं।
2. धारचुला से भी कुछ आगे ठीक सीमा पर जिप्ती गाँव में हनुमान मन्दिर की स्थापना 1988 में हुई। कहते हैं इस मन्दिर की नींव एक मुसलमान सैनिक ने रखी थी और एक अन्य ईसाई सैनिक ने इसे बनवाया। जिस मूर्ति की यहाँ प्रतिष्ठा हुई थी, वह कैंची आश्रम से आई थी।
3. 1978 में महाराजजी के भक्तों ने अमेरिका के राओरा नगर में बाबा नीब करौरी आश्रम की स्थापना की और हनुमानजी का विग्रह स्थापित किया।
4. 1984 में तमिलनाडु में मद्रास से कोई 32 किलोमीटर की दूरी पर वीरापुरम् में महाराजजी के एक भक्त श्री हुकुमचन्द ने इस मन्दिर को बनवाया था। वहाँ महाराजजी के विग्रह के साथ-साथ सुब्रह्मण्यम् स्वामी का भी विग्रह स्थापित है।
5. 1984 में पिथौरागढ़ जिले में गर्जिला ग्राम में हनुमान मन्दिर की स्थापना हुई।
6. 1984 में ऋषिकेश हनुमान मन्दिर का पुनरुद्धार किया गया।
7. 1985 में बदरीनाथ में बाबा नीब करौरी आश्रम की स्थापना हुई।

मनीषी, संत, योगी, महात्मा

सन्त महात्माओं के दुर्लभ प्रसंग	एस० एन० खण्डेलवाल
तुकाराम गाथा (संतश्रेष्ठ तुकाराम के चुने हुए अभंगों का भावानुवाद)	अनु०: ना० वि० सप्रे
काशी की पांडित्य परम्परा	पं० बलदेव उपाध्याय
काशी के विद्यारत्न संन्यासी	पं० बलदेव उपाध्याय
श्री श्री सिद्धिमाता	राजबाला देवी
योगिराज तैलंग स्वामी	विश्वनाथ मुखर्जी
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	डॉ० अर्जुन तिवारी
प्रकाश-पथ का यात्री (एक सिद्ध योगी की आत्मकथा)	योगेश्वर
अघोर पंथ और संत कीनाराम	डॉ० सुशीला मिश्र
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव
करुणामूर्ति बुद्ध / महामानव महावीर	डॉ० गुणवन्त शाह
तथागत (आत्मकथात्मक उपन्यास)	डॉ० बाबूराम त्रिपाठी
बुद्ध और उनके समकालीन / बुद्ध और उनकी शिक्षा	डॉ० प्रेमनारायण सोमानी
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग	बच्चन सिंह
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति)	हरिश्चन्द्र मिश्र
सन्त रैदास	श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला
संत रज्जब	डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय
रावण की सत्यकथा / कथा त्रिदेव की	रामनगीना सिंह
मनीषी की लोकयात्रा (पं० गोपीनाथ कविराज का दर्शन-दर्शन)	डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह
योगिराजाधिराज श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंस	अक्षयकुमारदत्त गुप्त कविरत्न
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	नन्दलाल गुप्त
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	पं० गोपीनाथ कविराज
भारत के महान योगी (14 भाग : 7 जिल्द)	विश्वनाथ मुखर्जी
भारत की महान साधिकाएँ	विश्वनाथ मुखर्जी
महाराष्ट्र के संत-महात्मा / महाराष्ट्र के कर्मयोगी / समर्थ रामदास	ना० वि० सप्रे
आधुनिक भारत के युग प्रवर्तक संत	लक्ष्मी सक्सेना
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	डॉ० गिरिराज शाह
पूर्वांचल के संत महात्मा	पराग कुमार मोदी

विश्वविद्यालय प्रकाशन
पो०बॉ० 1149, विशालाक्षी भवन,
चौक, वाराणसी - 221001
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
e-mail : sales@vvpbooks.com

₹ 30.00
ISBN:978-93-5146-171-5
9 789351 461715
www.vvpbooks.com